UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 2.1 Year - 10 February, 2019

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Associate Professor of Commerce
and Vice Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
Mob. 9415388337 E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com

Enclosure - 12

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 10, No. 2.1, February, 2019
Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

अनुक्रमणिका

☛	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व भारतीय संस्कृति **डॉ0 विनय कुमार**	1-5
☛	कालिदासस्य पर्यावरण निरूपनम् **डॉ0 ब्रजेश कुमार**	6-10
☛	गांधीवादी विकास प्रतिमान **डॉ0 संजय कुमार पाल**	11-16
☛	शृंखला की कड़ियाँ एवं महादेवी वर्मा **डॉ0 सरस्वती**	17-23
☛	नवाबी शासन काल में सामाजिक वैविध्य **डॉ0 आदित्य नरायण सिंह**	24-26
☛	'आप्रवासी' की अवधारणा का उद्भव और विकास **रवि प्रकाश सिंह**	27-32
☛	कहानी की विकास यात्रा और समकालीन हिन्दी कहानी **कुमकुम यादव**	33-35
☛	कमलेश्वर की कहानियों में पात्रों का अध्ययन **उस्मान ख़ान**	36-40
☛	बिहार में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मतवादो का उदय : भौतिकवादी परिप्रेक्ष्य **अजय कुमार भारती**	41-43
☛	कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के सम्बन्धों का सर्वेक्षण (1922 ई0 तक) **डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह**	44-46
☛	ग्रामीण विकास में बैंकों की भूमिका **डॉ0 कमलेश कुमार कौशल**	47-50
☛	गाँधी और समाजवाद **डॉ० सुजित कुमार 'निराला'**	51-53
☛	मुस्लिम महिला शिक्षा और सशक्तिकरण **कहकशा तबस्सुम**	54-58
☛	दलित महिलाएँ और समाजिक परिवर्तन **डॉ0 अनसार अली**	59-60
☛	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी एवं मीडिया की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **डॉ0 अरुण कुमार**	61-64
	खादी एवं वस्त्र के विकास में बिहार की महिलाओं का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन **डॉ0 संजय कुमार**	65-70

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 10, No. 2.1, February, 2019
Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

☛	पावरलूम उद्योग में कार्यरत मुस्लिम श्रमिकों का अध्ययन (मऊ जिले के सन्दर्भ में) **[redacted]**	71-76
☛	ललितपुर जनपद का मन्दिर स्थापत्य **आशुतोष पाण्डेय**	77-80
☛	स्वयंप्रकाश : व्यक्तित्व और कृतित्व **डॉ0 कुमार निशांत**	81-84
☛	रेणु के उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति **डॉ0 रीभा कुमारी**	85-88
☛	चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श **रमेश कुमार राही**	89-91
☛	21वीं शदी के हिन्दी उपन्यासों में महिला हिंसा का पुरूषवादी दृष्टिकोण **सुरेश कुमार यादव**	92-94
☛	व्याकरणशास्त्रप्रयोजनम् **मुकेशकुमारत्रिपाठी**	95-98
☛	काश्मीर शैवदर्शनम् **विवेक कुमार उपाध्यायः**	99-103
☛	उत्तराखड मे कामकाजी महिलाओं की स्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **आशा एवं डॉ0 मोहम्मद कामिल**	104-108
☛	बच्चों के शारीरिक पोषण एवं विकास में ऊर्जा की कमी का प्रभाव **प्रियम्**	109-110
☛	सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका **डॉ0 जितेन्द्र कुमार**	111-114
☛	स्वामी विवेकानन्द के मानवतावादी अवधारणा : एक दार्शनिक विवेचन **सुमन कुमारी**	115-116
☛	रतिनाथशर्मणः काव्याना सांस्कृतिकतत्त्वदृष्ट्या समीक्षणम **नीतीशकुमारमिश्रः**	117-118
☛	बौद्ध काल में महिलाओं का सामाजिक जीवन **डॉ0 उषा कुमारी**	119-121
☛	बौद्ध दर्शन में सद्गुण : एक दार्शनिक विश्लेषण **डॉ0 श्वेता कुमारी**	122-124
☛	आल्हाखण्ड मे कथानक रूढ़ियाँ **द्युति मालिनी**	125-126
☛	राजमण्डल **डॉ0 रश्मि अग्रवाल**	127-128
☛	डॉ0 विद्यानिवास मिश्र के ललित निबन्धों मे लोकसाहित्य **शिखा यादव**	129-131
	राजमण्डल **डॉ0 रश्मि अग्रवाल**	132-134

☛	जाति और राजनीति **विशाल कुमार गुप्ता**	135-140
☛	बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर के आर्थिक क्षेत्र संबंधित मौद्रिक विचार **डॉ0 अजय यशराज**	141-142
☛	महात्मा गाँधी का खादी प्रेम और आर्थिक आत्मनिर्भरता : एक अध्ययन **राकेश रंजन**	143-145
☛	बौद्ध जातक समाज में लोक महोत्सव एवं आमोद–प्रमोद (मनोरंजन) का वर्णन **जितेन्द्र कुमार गोंड**	146-148
☛	योगसूत्र के आलोक में चित्तवृत्ति विमर्श **अभिनव कुमार पाण्डेय**	149-150
☛	बिहार में नकम सत्याग्रह एवं चौकीदारी कर बंदी : विरोध के प्रतीक **विकास कुमार**	151-155
☛	सिंहभूम में बालिका शिक्षा के प्रति समाज का नजरिया : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में **वन्दना ठाकुर**	156-158
☛	लोकसाहित्य आ लोकवार्ता **डॉ0 लोली कुमारी झा**	159-160
☛	भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रकृति–चित्रण **धर्मेन्द्र कुमार**	161-163
☛	कृषि विकास एवं पर्यावरणीय अवन्यन **रंजन कुमार रवि**	164-166
☛	भारत में बच्चों का विकास और शिक्षा : एक समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण **डॉ0 शैलेन्द्र कुमार प्रभाकर**	167-170
☛	वेदों में वर्णित कृषि–विज्ञान : एक अवलोकन **डॉ0 शशि शेखर सिंह**	171-172
☛	परिवर्तनशील समय में शिक्षानुसार स्त्रियों के बदलते अधिकार **डॉ0 अनामिका अणि**	173-178
☛	भारतीय संविधान में महिलाओं की प्रदत्त अधिकार की अवधारणा **मो० असगर अली**	179-180
☛	यौन प्रधान फिल्मों का किशोर सिनेदर्शकों पर प्रभाव **अमरेन्द्र कुमार आर्य**	181-184
☛	अथर्ववेद : एक परिचय **डॉ0 संजू सिंह**	185-188
☛	कौण्डभट्टदिशा धात्वर्थविचार: **डॉ० विनय कुमार तिवारी**	189-190
☛	बाल श्रमिकों का एक समाजशास्त्रीय शोध **डॉ0 अलका गुप्ता**	191-192
☛	निराला का मानवतावाद **डॉ0 लक्ष्मीदेवी मिश्रा**	193-194

☛	महर्षिपतञ्जलिः तत्कालविषये विषये विभिन्नानि मतानि च **डॉ0 रजनी सिन्हा**	195-196
☛	हिन्दी महिला आत्मकथा लेखन : संघर्ष की महागाथा **डॉ0 शशिकला**	197-200
☛	अस्पृश्यता उन्मूलन हेतु किए गए सामाजिक सुधार **डॉ0 संतोष तिवारी**	201-204
☛	प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी चेतना के विविध आयाम **डॉ0 अर्पित कुमार**	205-206
☛	प्राचीन कालीन भारतीय समाज का ऐतिहासिक अध्ययन (वैदिक काल से 300 ई. तक) **मारकण्डे यादव**	207-208
☛	उषा किरण खान मैथिली रचना : एक विश्लेषण **ममता कुमारी**	209-210
☛	भारतीय राष्ट्रवाद में आर्य समाज की भूमिका **डॉ0 श्वेता सिंह**	211-214
☛	रोहतास जिला में बाढ़ आपदा : एक भौगोलिक अध्ययन **डॉ0 गीता समरेन्द्र**	215-216
☛	Impact of Trips Agreement on Indian Trade Secret Laws **Dr. Zubair Ahmed**	217-222
☛	Approximation of Conjugate Function Belonging to Lip $(\xi(t), p)$ Class of Conjugate Fourier series by Matrix Summability Method **Gopal Krishna Singh**	223-230

शिष्यपरम्परायाश्चापि वर्णनं विद्यते किन्मत्रतु पतञ्जलेनम्निः कुत्रापि उल्लेखो न मिलति। यथा शान्तिपर्वणि '३०८।४५' वसिष्ठो हिरण्यगर्भतो योगं प्राप्तवान् इति स्मर्यते। अनेन हैरण्यगर्भयोगसत्ता सिद्धयति। सा च पातञ्जलयोगोपजीव्य– भूता। शान्तिपर्वणि, अश्वमेघपर्वणि, अनुशासनपर्वणि च योगप्रसङ्गो विद्यते तत्र योगसूत्रवत् कथनं प्रत्यक्षम् उपलभ्यते। अन्यत्रापि महाभारते 'सन्तोषः परम सुखम्' इत्युक्तम्। 'सन्तोषदनुत्तमः सुखलाभः'[१०] अनेन द्योत्यते यद् योगशास्त्रसिद्धान्ताः महाभारते बहुलमात्रायामुपलभ्यन्ते किन्तु पतञ्जलेर्नाम कुत्रापि नोपलभ्यते।

पाश्चात्यमतावलम्बिनां विदुषां मते योगसूत्राणां रचना ईसापूर्व प्रथमद्वितीयतृतीयशताब्द्यां बभूव, अविचारितरमणीयमेव, यतो हि अस्माभिः पूर्वमेव खण्डितम् यद् योगसूत्रकारः पतञ्जलिः महाभाष्यकारपतञ्जलेः पूर्ववर्ती। महाभाष्यकारस्य कालः ईसापूर्व प्रथमद्वितीयतृतीय शताब्दी भवितुं शक्यते यतो हि स अर्वाचीनः

पतञ्जलेः कालो बुद्धात् परमपि भवितुं न शक्यते। यतो हि प्राचीनतम् बौद्धग्रन्थेष्वपि योगसूत्रानुकृतिर्दृश्यते। बौद्धाचार्या एव पातञ्जलयोगमनुकृतवन्तः, अतस्तद्रचितग्रन्थेषु योगविचारपरायणेषु पातञ्जलयोगसूत्रम् सदृशशब्दव्यवहारबहुलेषु क्वचिद् भ्रान्तिभवितुं शक्यते। विषयेऽस्मिन् तर्क प्रस्तुवता डा० रामशंकरभट्टाचार्येणुक्तम्– 'यदि एतान् ग्रन्थान् अन्वकरिष्यत् पतञ्जलिस्तर्हि पातञ्जलसूत्रमेवानुकृतं बौद्धः।'[११]

व्यासोक्तवचनेन नेदं सिध्यति यत् सूत्रकारेण बौद्धानां मत–खण्डनं कृतम् अपितु इदमेव सत्यं यत् सूत्रकारेण स्वाभाविकीमेव शङ्का समुद्दाव्य तस्याः विवेचनं प्रस्तुतीकृतम्। न तत्स्वाभासं दृश्यत्वात्'[१२] न चैकचित्ततन्त्रम्'[१३] प्रभृतिसूत्रैरपि नेदं प्रकटितं भवति यन्महर्षिणा बौद्धानां मतखण्डनायैव इमानि सूत्राणि निर्मितानि। वस्तुतस्तु स्वाभाविकीनां शङ्कानां समाधानेव तेषु सूत्रकारेण कृतम्। एवमेव अन्यत्रापि योगसूत्रं न बौद्धमत लक्षयति।

योगसूत्रेषु न केवलं बौद्धानां मतमपितु वैष्णवादिसम्प्रदायानां मतमपि दृश्यते। एवमेव विभिन्नेषु पुराणेष्वपि योगसूत्रस्य मतानि येन केनापि रूपेण दृश्यन्ते किन्तु अनेनापि नेदं सिध्यति यद् योगसूत्राणि तेभ्यः ग्रन्थेभ्यः परवर्तानि यतो हि एतेषु ग्रन्थेषु वर्णितानि मतानि न सर्वथा नवीनानि अपितु तेषां बीज यत्र तत्रोपलभ्यते। योगशास्त्रे यदि तेषां मतानां खण्डनं– मण्डनं वर्णनं वा उपलभ्यते तदपि तत्स्वाभाविकमेव। अनेन योगदर्शनस्य परवर्तिता न सिध्यति।

महाभारते पतञ्जलेर्नाम न दृश्यते तत्सु चित्रम्, यतो हि तत्र साङ्ख्ययोगयोः सर्वेषामाचार्याणां वर्णनमुपलभ्यते। अतः अनेन द्योत्यते यद् योगसूत्राणां रचना महाभारतस्य, पश्चादभूदिति किन्तु पुराणोक्तशाखापरम्परागणना सर्वथा वैदिकग्रन्थानुसारिणी न दृश्यते। अतोऽत्र वक्तुं शक्यते यद् नैक परम्परासु विभक्ताः शाखागणनाप्रवादाः प्रायेण भ्रष्टाः। पुराणेषु वर्णितानि नामानि उपाख्यानानि च लोककथासु आधृतानि सन्ति। मतमिदं 'पुराणगत वैदिक– सामग्री का समीक्षात्मक अध्ययन' नामके ग्रन्थे भट्टाचार्यमहोदयैः प्रकटीकृतम्। अतः अनेन इदमपि स्पष्टं भवति यत् पुराणवत् महाभारतेऽपि अनेके आचार्याः न वर्णिताः इति मन्तव्यम्।

अत्र पुनः शङ्केयं समुदेति यत् पतञ्जलिः महाभारतात् पूर्वं पश्चाद् वा बभूवेति। विषयेऽस्मिन् डा० रामशङ्करभट्टाचार्य– महोदयेन कथितम्– 'अस्मन्नते महाभारतयुद्धादपि प्राचीनः पतञ्जलिः कालस्य सम्यक् निरूपणं तु न कर्तुं शक्यते साम्प्रतम्।'[१४] अत्र प्रमाणाभावेन यदि भट्टाचार्यमहोदयस्य वचनं नाऽपि स्वीक्रियेत तथापि इदं तु निश्चप्रच वक्तुं शक्यते यद् पतञ्जलेः कालः महाभारतस्य पश्चात् किन्तु बौद्धात् पूर्वम आसीत् अयमेव योगसूत्रचनायाः अपि कालः।

सन्दर्भग्रन्थाः

१. वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग– १, पृ. ३१२
२. रामशङ्करभट्टाचार्य पातञ्जलयोगदर्शन पृ. ६०३
३. भोजवृत्ति मंगलाचरणश्लोक ५
४. मत्स्यपुराण १६५/२५
५. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास युधिष्ठिरमीमासक प्रथमो भागः, २०३० वि. सं.
६. रामशङ्करभट्टाचार्य पातञ्जलयोगदर्शन भूमिका पृ. ३०
७. रामशङ्करभट्टाचार्य पातञ्जलयोगदर्शन पृ. ३१
८. व्यासभाष्य ४/२० पृ. ४३१
९. वनपर्व २/४६
१०. पातञ्जलयोगसूत्रम् २/४२
११. रामशङ्करभट्टाचार्यकृत पातञ्जलयोगदर्शन भूमिका पृ. ३४
१२. पातञ्जलयोगसूत्रम् ४/१६
१३. पातञ्जलयोगसूत्रम् ४/१६
१४. रामशङ्करभट्टाचार्यकृत पातञ्जलयोगदर्शन भूमिका पृ. ३४

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 10, No. 2 1, February, 2019 Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

हिन्दी महिला आत्मकथा लेखन : संघर्ष की महागाथा

डॉ0 शशिकला
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

बीसवीं शताब्दी का अंतिम और इक्कीसवीं शताब्दी का प्रथम दशक हिन्दी आत्मकथा लेखन का एक महत्वपूर्ण दौर है। इस दौर में स्त्रीवादी आन्दोलन से प्रभावित होकर अधिकांश महिला लेखिकाओं द्वारा एक तरफ साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएं की जा रही थीं तो दूसरी तरफ आत्मकथा लेखन में भी तेजी से वृद्धि हुई है। इसके पूर्व हिन्दी आत्मकथा लेखन की समृद्ध परंपरा रही है, किन्तु महिला आत्मकथा लेखन की शुरूआत देर से हुई। संभवतः इसका कारण यहीं रहा होगा कि उस दौर के सामाजिक ढाँचें में स्त्रियों को सच बोलने की आजादी नहीं थी, लेकिन सच तो यह है कि स्त्रियों की स्वतंत्रता तो दूर की बात है हमारा समाज यह कभी स्वीकार नहीं करता कि स्त्री कोई आवाज भी उठा सके। स्त्री को अपनी पहचान बनाने में महिला आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आत्मकथा लेखिकाओं की कृतियों में नारी केन्द्रीय चरित्र रही है, जो गांव कस्बों से लेकर विज्ञापनों की दुनिया तक की यात्रा तय करती है। नारी मनोविज्ञान, उसका आत्मपीड़न रूप, गुलाम मानसिकता, स्वतंत्रता संघर्ष और प्रेम सम्बन्धों को पूरे मानवीय प्रसार में बड़ी संजीदगी से प्रस्तुत किया गया है।

महिला रचनाकारों के आत्मकथा के माध्यम से उनके जीवन, रीति–रीवाजों के साथ–साथ समाज द्वारा किये गये अपमान, शोषण एवं उपेक्षा को उन्होंने किस तरह देखा, सहा और उनका विरोध करने की ताकत जमा की, इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। अन्या से अनन्या में डॉ0 प्रभा खेतान कहती हैं–"**आत्मकथा एक चीख भी है जो बताती है कि अपने किये और भोगे हुए के लिए सिर्फ हम जिम्मेदार नहीं होते। हमारे पीछे खड़ा सारा समाज इस जिन्दगी का साक्षी और सहभोक्ता ही नहीं इसकी हालत के लिए उत्तरदायी व्यूह रचना का निर्माता भी वह है।**"[1]

हिन्दी आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में **कौशल्या बैसंत्री** की आत्मकथा **दोहरा अभिशाप** में उनका भोगा हुआ यथार्थ है। यह आत्मकथा इस मायने में विशिष्ट है कि यह केवल एक स्त्री की आत्मकथा नहीं बल्कि एक दलित स्त्री की आत्मकथा है जिसने दोहरे संघर्ष को जिया है। वे घर के भीतर स्त्री होने का और घर के बाहर दलित एवं स्त्री होने का। अपनी दादी के स्वाभिमानी व्यक्तित्व के विषय में लिखते हुए कौशल्या जी लिखती हैं–" **आजी हरदम कहा करती थी कि वह अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगी, किसी पर बोझ नहीं बनेंगीं। अपने कफन का सामान भी वह स्वयं जुटाएँगी और उन्होंने अपनी बात पूरी करके दिखाई। कफन का पूरा सामान उनकी गठरी में मौजूद था। वह मानिनी स्वभाव से रहीं, किसी के आगे नहीं झुकीं।**"[2] एक सामान्य दलित कन्या के रूप में जन्म लेने वाली लेखिका अपनी शिक्षा और संघर्ष के कारण संपूर्ण दलित वर्ग के लिए प्रेरणा स्रोत रहीं और लेखिका की प्रेरणा स्रोत उनकी दादी रही हैं।

1996 ई0 में कुसुम अंसल द्वारा लिखी आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' प्रकाशित हुई। अलीगढ के रईस घराने में जन्मीं लेखिका अपने परिवार में उपेक्षित रहीं इस संदर्भ में वे लिखती हैं– "**मेरी ये जीवनी हमारे परिवार का कोई ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है, ये मात्र मेरे जीवन का सारतत्व है। वैसे भी मैं अपने परिवार की आंशिक अभिव्यक्ति हूँ।**"[3] आंशिक अभिव्यक्ति से तात्पर्य लेखिका को 10 वर्ष की आयु में उनके निःसंतान बुआ ने गोद लिया था। लगभग 6 वर्ष के पश्चात् इनकी बुआ की गोद भर जाती है जिसके कारण लेखिका को वापस अपने घर आना पड़ता है। वापस आने के बाद अपनी सगी माँ के न होने से उन्हे आत्मीयता एवं ममत्व की कमी तथा अकेलेपन का अनुभव होता है जिस संदर्भ में वह लिखती हैं–"**उस घर की दीवारों से चिपका मेरा चिरपरिचित पुराना डर–सहम–सन्नाटा पुनः मेरे अस्तित्व से आ मिला था। अपने लिए किसी के न होने की कमी बहुत अखरती थी पर कोई चारा नहीं था।**"[4] अपनी आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' में लेखिका कुसुम अंसल ने अपने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा '**कस्तुरी कुंडल बसै**' और '**गुड़िया भीतर गुड़िया**' क्रमशः 2002 तथा 2008 में दो खण्डों में प्रकाशित होती है। कस्तुरी कुंडल बसै में मैत्रेयी ने अपनी माँ एवं उनके विद्रोही स्वभाव तथा माँ के द्वारा स्वयं के बल पर अपना मार्ग प्रशस्त करने की स्थिति का पूरी ईमानदारी के साथ चित्रण किया है। आत्मकथा के दृष्टिकोण से मैत्रेयी ने अपनी माता के आंतरिक तथा सामाजिक दोनों ही स्थितियों का यथार्थ वर्णन किया है। लेखिका को एक पिता एवं एक भाई की कमी हमेशा खलती रही क्योंकि

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता-प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 57/2 जनवरी-मार्च 2022 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा

डॉ० मीना अग्रवाल

ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०

डॉ० अनुभूति

सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम
प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : छह हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

ISSN 0975-735X

अनुक्रम

आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की निष्पत्ति के पूर्व सूत्र/ **डॉ॰ चारु मिश्रा** 15

निराला के कथासाहित्य में युगीन दलित यथार्थ/ **हरिओम कुमार द्विवेदी** 19

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और शिक्षा की माध्यम भाषा/ **डॉ॰ जयशंकर तिवारी** 24

हिंदी व्यंग्य साहित्य : हरिशंकर परसाई और लतीफ घोंघी/
डॉ॰ गिरधारी लाल लोधी, भुवनेश्वर पटेल 30

गोविंद शर्मा की कहानियों में ज्ञान, संस्कार और मनोरंजन का भंडार/
डॉ॰ मंजुश्री वेदूला 38

आर्यसमाज-आंदोलन का राजनीतिक योगदान/ **मोहित गंगवार** 43

भारतेंदु-मंडल और हिंदी साहित्य की उपादेयता/ **डॉ॰ निर्भय शर्मा** 49

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियाँ : समसामयिक विचार/
डॉ॰ पठान रहीम खान 54

यशपाल के उपन्यास और नारी-मुक्ति के प्रश्न/ **पूजा शर्मा, डॉ॰ अमिष वर्मा** 60

सांस्कृतिक मूल्य और भोजपुरी सिनेमा/ **प्रो॰ संजय कुमार, डॉ॰ राहुल** 66

स्वतंत्रता आंदोलन में शाहजहाँपुर के क्रांतिकारी ठाकुर रोशनसिंह का योगदान/
डॉ॰ शिल्पा जैन 71

भगवतीप्रसाद द्विवेदी जी की कहानियों में बाल मनोविज्ञान : परिवार के संदर्भ में
एआर॰ मुत्तुनाच्चम्मै, डॉ॰ बी॰ कामकोटी 77

पं॰ दीनदयाल उपाध्याय के हिंदुत्व एवं राष्ट्रवाद-संबंधी विचारों की
वर्तमान समय में प्रासंगिकता/ **सुशील दत्त, डॉ॰ सोनिका** 81

बेघर : प्रेम, विवाह और नैतिकता का द्वंद्व/ **डॉ॰ सुषमा कुमारी** 90

वर्तमान समय में कालिदास के साहित्य की उपादेयता
'वन एवं वन्यजीव संरक्षण के संदर्भ में/ **डॉ॰ कल्पना कुमारी** 95

जितेंद्र श्रीवास्तव की कविता में जनजीवन : एक अनुशीलन/ **वैशाली** 100

घुमंतू जीवन की व्यथाकथा/ **डॉ॰ सर्वेश मौर्य** 104

भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में वन बेल्ट, वन रोड परियोजना का विश्लेषणात्मक
अध्ययन/ **डॉ॰ शिखा श्रीवास्तव, मुकेश कुमार प्रजापति** 112

स्नेह ठाकुर के 'आज का पुरुष' कथासाहित्य की समीक्षा/ **डॉ॰ अर्चना डेनियल** 120

महाकवि भास के नाटकों की वर्तमान में प्रासंगिकता/ **डॉ॰ निरमा मीना** 125

अज्ञेय और मर्ढेकर के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन/ **डॉ॰ सतीश यादव** 132

परमाणु ऊर्जाकेंद्र के निकटवर्ती स्थानीय निवासियों की संरक्षा एवं सुरक्षा से
संबंधित सरकारी नीतियों एवं नियमों का अध्ययन/
डॉ॰ शिखा श्रीवास्तव, शिखर कांत श्रीवास्तव 139

ISSN 0975-735X

भारत के जनजाति वर्ग के संरक्षण एवं उत्थान हेतु संवैधानिक प्रावधान/ **दिनेश चन्द शर्मा**
मंदार पौराणिक क्षेत्र की ऐतिहासिकता : एक अध्ययन/ **डॉ॰ आशासिंह** 14
डॉ॰ राजकुमार निजात के काव्य में सामाजिक यथार्थ/ **गुरप्रीत कौर** 15
वर्तमान संदर्भ में गुरु जम्भवाणी में निहित पर्यावरण चेतना की प्रासंगिकता/ **किरणमयी, डॉ॰ साहिरा बानू बी॰ बोरगल** 15
'साथ चलते हुए' उपन्यास में व्यक्त विविध सामाजिक सरोकार/ **ललिता देवी** 15
रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में साहसी नारी का चित्रण/ **नीलम** 16
जीवन की महाभारत/ **डॉ॰ नीतू गुप्ता** 16
ममतामयी माँ कौशल्या/ **मनोज कुमार यादव** 17
मध्यकालीन समाज और कबीर की सामाजिक चेतना/ **डॉ॰ मनोज सिंह यादव, डॉ॰ शशिकला** 17
भगवानदास मोरवाल की कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्याएँ/ **कुलदीप, डॉ॰ कृष्णा जून** 18
ममता कालिया के साहित्य में नारी की स्थिति/ **राधिका देवी पांडेय, डॉ॰ सुधीर कुमार शर्मा** 19
संत गरीबदास साहित्य : औपनिषदिक उपजीव्यता/ **पिंकी देवी** 19
समकालीन कथाकार स्वयंप्रकाश की कहानियाँ : मानवीय यथार्थ का दर्पण/ **स्मिता भारती** 20
ममता कालिया की कहानियाँ और नारी/ **अनिता देवी** 20
हिंदी दलित कहानियाँ में चेतना, जागृति एवं प्रतिरोध के स्वर/ **डॉ॰ अजय कुमार** 21
शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण राजनीति की सामाजिकता/ **चंद्रावती, डॉ॰ नमिता जैसल** 21
कृष्णा सोबती और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री आत्मनिर्भरता/ **ममता देवी** 22
गीता पर शंकराचार्य का भाष्य/ **डॉ॰ निशा गोयल** 22
सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित समाज/ **डॉ॰ पी॰ सरस्वती** 23
साहित्य में दलित-विमर्श/ **मोनिका यादव** 23
विचित्र नाटक : काव्य-कला/ **डॉ॰ ज्योति कौर** 24
ममता कालिया और नेहा शरद की कविताओं में अभिव्यक्त नारी-संघर्ष/ **कुशल महंत** 24
राजेश जोशी की काव्यभाषा/ **पीयूष कुमार** 25
सोशल मीडिया की लत पर एक नजर/ **अमरजीत** 25

ISSN

मध्यकालीन समाज और कबीर की सामाजिक चेतना

डॉ॰ मनोज सिंह यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
काशीनरेश राज॰ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही
डॉ॰ शशिकला
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

कबीर का जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ था जब हमारे समाज में विषमताएँ, निराशा, छुआ-छूत, विश्वासघात, वाह्याडंबर जाति-पाँति, असत्य, अनाचार, व्याभिचार जैसे सामाजिक कुविचारों का बोलबाला था। 'मुसलमानों के आने के कारण हिंदू समाज में आत्मरक्षा की प्रवृत्ति भी बड़ी तीव्र प्रक्रिया के रूप में हुई। उनकी जाति प्रथा अधिकाधिक सी जाने लगी। छूत का भय और वर्ण संकरता की आशंका ने समूचे समाज को ग्रस लिया।'[1] ऐसे ही समय में जब कबीर का पदार्पण हुआ तो उन्होंने तात्कालीन सामाजिक परिस्थितयों व विसंगतियों से समाज को छुटकारा दिलाने के लिए विभिन्न धर्मों जातियों, संप्रदायों, वर्णों तथा धारणाओं में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। कबीर की सामाजिक चेतना या समाज सुधारक व्यक्तित्व पर विचार करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि क्या मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था से जुड़ी हुई समस्याओं को धार्मिक तथा राजनीतिज्ञ समस्या से अलग करके देखा जा सकता है? एक क्षण के लिए मध्यकालीन या कबीरकालीन समाज को दरकिनार करके अपने आधुनिक समाज को ही देख लिया जायए तो बात कुछ अधिक स्पष्ट रूप से समझ में आ जाएगी। आज के समाज की अनेक समस्याओं में से सबसे बड़ी और प्रमुख समस्या है धार्मिक कट्टरपन। इसी धार्मिक कट्टरता या सांप्रदायिकता के कारण समाज में व्यक्तियों का सहअस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है जो कि सामाजिक संगठन की मूलभूत आवश्यकता है। कबीर का मानना था कि यह सारा व्यक्त जगत एक ही तत्त्व से बना हुआ है इसलिए किसी भी प्रकार की भेद-दृष्टि मिथ्या ही होगी।

कबीर केवल भक्तिकालीन कवि भर नहीं थे बल्कि एक बड़े समाज सुधारक भी थे। कबीर ने जाँति-पाँति, छुआ-छूत जैसी अनेक सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करके एक समरस, आडंबरविहीन, समुन्नत मानव समाज का आदर्श दिया। कबीर मूलतः भक्त थे, लेकिन उनकी सामाजिक चेतना अत्यंत प्रखर थी और वे एक रूढ़िमुक्ति, शोषण मुक्त समता पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया। कबीर का मानना था कि मानव-मानव में भेद तो परम अज्ञान का द्योतक है। इसी तात्विक दृष्टि से प्रेरित कबीर ने जाँति-पाँति, छुआ-छूत, ऊँच-नीच और ब्राह्मण-शूद्र के भेद का विरोध किया है। इसी आधार पर उन्हें समाज सुधारक समझा जाता है इसमें कोई दो राय नहीं कि इन भेदों को दूर करके एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है। यद्यपि ऐसा समाज जिसमें ब्राह्मण-शूद्र का भेद न हो, छुआछूत

ISSN 0975-735X

A Bi-annual Interdisciplinary Research Journal of KKSU
Peer Reviewed Journal of Fundamental & Comparative Research

Volume- IX, Issue-III (II), 2022

ISSN 2277-7067

शोधसंहिता

Editor in Chief : **Prof. Shrinivasa Varkhedi**
Hon'ble Vice Chancellor

General Editor : **Prof. Madhusudan Penna**

Executive Editor : **Dr. Dinakar Marathe**

Editorial Board : **Prof. Nanda Puri** **Prof. C.G.Vijaykumar**
Prof. Lalita Chandratre **Prof. K. K. Pandey**
Dr. Deepak Kapde (Secretary)

Published by : **Registrar,** KKSU, Ramtek

KAVIKULAGURU KALIDAS SANSKRIT UNIVERSITY
RAMTEK

Index

S. No.	Content	Author's	Page No.
1	THE BEHAVIOR OF ECONOMIC ENTITIES IN THE SECURITIES MARKET	Mohammed Shakeel	1-7
2	वैदिक ऋषिकाओ का शिक्षा दर्शन और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	प्रतिभा शर्मा डॉ० शशी चित्तोड़ा	8-13
3	NPA ROOT CAUSE ANALYSIS AND MEASURES TAKEN BY GOVERNMENT AND REGULATOR	Khusboo Ramawat Dr.Nitu Maan	14-23
4	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डिजिटल साक्षरता की ओर बढ़ते कदम	डॉ. (श्रीमती) संजू पाण्डेय डॉ. प्रवीण कुमार पाण्डेय	24-29
5	COMPARISON OF WORKING CAPITAL EFFICIENCY OF HINDUSTAN PETROLEUM PVT. LTD (PRE AND POST COVID 19)	Dr. Gurneet Kaur Suri	30-36
6	CORE COMPETENCE OF INDIAN PETROLEUM COMPANIES (A COMPARATIVE STUDY OF RELIANCE INDUSTRIES AND INDIAN OIL CORPORATION)	Dr Ekta Dr Aarti Chopra	37-43
7	IMPACT OF TEACHING METHOD ON LEARNING AMONG HIGH SCHOOL STUDENTS	Dr. Trupti Bhalerao	44-48
8	RELEVANCE OF KNOWLEDGE OF ICT TOOLS AMONG PRIVATE HIGH SCHOOL TUTORS IN DETERMINING THEIR LEVEL OF INCOME: A STUDY IN DIBRUGARH DISTRICT OF ASSAM	Arnob Paul Saurish Bhattacharjee.	49-60
9	DIFFERENTIAL PRIVACY PRESERVATION APPROACHES FOR DISTRIBUTED DATA SECURITY FOR LARGE DATASET	Rohit Ravindra Nikam Dr. Rekha Shahapurkar	61-78
10	FAR REACHING ORAL HISTORY: THE USE OF ORAL HISTORY PERSPECTIVE IN A GLOBALISED WORLD.	Aarif Ahmad Najar	79-82
11	IN DILAPIDATION: DEPICTION OF GENDER INEQUALITY IN TARA	Dr. Mohd Shahid Ganaie Tariq Ahmad Guroo	83-85
12	उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के कुँए और तालाब हनुमानगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में (१८५० से १९५० ई.)	श्रीमती रितु शर्मा डॉ. राजेन्द्र कुमार	86-91
13	भारत में कृषि उत्पादकता का रुझान: एक विश्लेषण (उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में)	डॉ० समृद्धि दाधीच देवेन्द्र पाल	92-101
14	भारतीय संस्थानों में कार्य प्रभावशीलता वृद्धि में संचार तथा एनीमेशन की भूमिका	डॉ० खाखू राम गेवा अमित माथुर	102-110
15	जिला मुजफ्फरनगर के छात्रों पर योगाभ्यास का शारीरिक योग्यता चरों पर प्रभाव	जय कुँवार डॉ मनोज कुमार टॉक	111-120

AN IMPACT OF CONSUMER AWARENESS ON BUYING BEHAVIOUR WITH REFERENCE TO WOMEN STUDENTS IN ARTS AND SCIENCE COLLEGES	Ms.D.Mehala Dr.G.Nedumaran Ms.C.Rani	121-128
WORK-LIFE BALANCE IN THE POST COVID-19 PERIOD	Mrs. B. Vimala Mrs. U.S.K. Subashini Dr. K. Alamelu Dr. G. Vinayagamoorthi	129-137
ETHICS AS A KEY FOR EFFECTIVE ENTREPRENEURSHIP	Prof. V.N. Parthiban	138-143
A STUDY ON PROBLEMS OF THE SALT INDUSTRY LABOURERS IN THOOTHUKUDI	Dr. P. Raj Kumar Dr. K. Rajamannar	144-151
हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के संदर्भ में	डॉ० शशिकला डॉ० मनोज सिंह यादव	152-155
EFFECTIVENESS OF DRY NEEDLING OVER ULTRASOUND THERAPY IN CASE OF MYOFASCIAL PAIN SYNDROME OF TRAPEZIUS MUSCLE OF CENTRAL TYPE	Neha Shukla Chandrashekhar Kumar Digvijay Sharma	156-166

SHODHSAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के संदर्भ में

डॉ० शशिकला

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी।

डॉ० मनोज सिंह यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही।, ई-मेल
manoj.hbh35@gmail.com

एकता का साधारण अर्थ है मिल-जूल कर कार्य करना। राष्ट्रीय एकता एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया एवं भावना है जो किसी राष्ट्र अथवा देश के लोगों में भाईचारा, प्रेम एवं अपनत्व का भाव प्रदर्शित करती है। यह प्रेम एवं अपनत्व ही राष्ट्रीय अखण्डता को स्थापित करती है।राष्ट्रीय एकता की भावना किसी देश के विभिन्न धर्म, संप्रदाय, जाति तथा विभिन्न भाषा बोलने वालों को एक साथ लाने का कार्य भी करती है।

हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और संप्रदायों का संगम स्थल है जो समूचे विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। अलग-अलग संस्कृति और भाषा के होते हुए भी हम सब एकता के सूत्र में बँधे हुए हैं। यहाँ सभी धर्मों एवं संप्रदायों को बराबर का दर्जा मिला हुआ है। हमारे भारतीय मूल्य गहराई से अपनी जड़ों से जूड़े हुए हैं और यह मूल्य सभी धर्मग्रन्थों में दिखाई देता है। सभी धर्मों एवं धर्मग्रन्थों ने मानवमात्र की एकता, अखण्डता, सार्वभौमिकता और शांति पर बल दिया है।

भाषा लोक व्यवहार का सशक्त माध्यम है। भावों को प्रकट करने, विचार को बोधगम्य बनाने तथा जगत व्यवहार को चलाने का विश्वव्यापी माध्यम है। आधुनिक हिन्दी के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की लिखी गई यह पंक्ति हमेशा से हमारी प्रेरणास्रोत रही है-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के शूल।।"[1]

वैसे तो भारत देश के भिन्न भिन्न भागों में अलग अलग भाषाएं बोली जाती हैं किन्तु हिन्दी हमारे देश कीऐसी भाषाहै, जो अधिकाशतः सम्पूर्ण देश में समान रूप से व्यवहृत होती है, इसी व्यापकता के कारण ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त है। राष्ट्रभाषा के संदर्भ में महात्मा गाँधी का कथन है -"जैसे अंग्रेज अपनी मातृभाषा अंग्रेजी में बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते हैं वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को भारतमाता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें।"

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

● वर्ष : 73 ● अंक : 03 ● जून, 2023

ISSN : 2321-4945

RNI NO. ASSBIL/2009/31008

एक हृदय हो भारत जननी

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

(भाषा, साहित्य, समाज, कला व संस्कृति विषयक शोध-पत्रिका)

UGC CARE Listed Journal

अंक : 03 जून, 2023

वर्ष : 73

परामर्श मंडल

श्री भारतभूषण महंत
कार्याध्यक्ष, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी (असम)

प्रो. आर.एस. सर्राजु
सम कुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय
तेलंगाना-500046

प्रो. प्रदीप के शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय
काजी रोड, गंगटोक, सिक्किम - 737101

डॉ. दीपक प्रकाश त्यागी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

डॉ. दिलीप कुमार मेधि
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

डॉ. अमूल्य चंद्र बर्मन
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

डॉ. अच्युत शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

प्रधान संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

संपादक

प्रो. मोहन
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-1

कार्यकारी संपादक

रामनाथ प्रसाद
प्रभारी साहित्य सचिव
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

विषय सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ

हिंदी विभाग

	संपादकीय		4
1.	'भक्त' हुए, उठ गए राम से भी, यों ऊपर...'	✍ डॉ. अनुशब्द	5
2.	रोज करें योग, दूर भगाएँ रोग	✍ प्रो. प्रदीप के शर्मा	12
3.	वृंदावन लाल वर्मा के सामाजिक उपन्यास : परिवेश एवं समस्याएँ	✍ डॉ. शशिकला	15
4.	जनजातीय विमर्श के आईने में 'रूपतिल्ली की कथा'	✍ प्रो. यशवंत सिंह	21
5.	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान	✍ डॉ. संदीप रणभिरकर	26
6.	हिंदी के 'डूब' एवं नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में अभिव्यक्त बाढ़ की समस्या : एक तुलनात्मक अध्ययन	✍ टिंकू छेत्री	32
7.	कृष्ण सोबती और निरूपमा बरगोहाईं के उपन्यासों : एक समीक्षा	✍ बर्णाली बैश्य	38
8.	शंकरदेव की अपूर्व सृष्टि अंकिया नाट	✍ डॉ. जोनाली बरुवा	44
9.	जनजाति के लोकगीत : एक अध्ययन	✍ पूजा बरुवा	50

অসমীয়া বিভাগ

10.	শ্রীমদ্ভগবত গীতা, ভাগৱত পুৰাণ আৰু নামঘোষাত নিহিত আত্মতত্ত্ব স্বৰূপ ঃ এক বিশ্লেষণাত্মক অধ্যয়ন	✍ ড০ বিভূতি লোচন শর্মা	56
11.	হোমেন বৰগোহাঞিৰ হাতী আৰু গৱখীয়া গল্পত পাৰিৱেশিক চেতনা ঃ এক অধ্যয়ন	✍ ড০ জ্ঞানেন্দ্র বর্মন	62
12.	ৰাজবালা দাসৰ আত্মজীবনীত আত্মসত্তাৰ ৰূপায়ণ	✍ ড০ স্মৃতি ৰেখা ভূঞা	68
13.	প্রাচীন কামৰূপত শৈৱধর্মৰ বিকাশ আৰু অসমত প্রচলিত শৈৱ ধাৰাৰ লোকগীত	✍ ড০ পল্লৱিকা শর্মা	77
14.	যিডু কৃষ্ণমূর্তিৰ দর্শনত মন আৰু চেতনা	✍ ড০ যদুমণি দত্ত	86
15.	স্বর্ণ বৰাৰ উপন্যাসত প্রতিফলিত জনজাতীয় মৃতক সম্পর্কীয় লোকাচাৰ	✍ বিমঝিম গগৈ	90
16.	অসমৰ ৰাজহুৱা গ্রন্থাগাৰসমূহৰ আধুনিকীকৰণ ঃ প্রত্যাশা আৰু প্রত্যাহ্বান	✍ হৃষিকেশ ভূঞা	95
17.	অনিমা গুহৰ ভ্রমণ সাহিত্য 'তৃতীয় বিশ্ববাসিনীৰ আমেৰিকা দর্শন' ঃ এক অৱলোকন	✍ অসীমা গায়ন	102

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

वृन्दावन लाल वर्मा के सामाजिक उपन्यास : परिवेश एवं समस्याएँ

डॉ. शशिकला

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मो. 7376558390
ई-मेल : shashi.bhu10@gmail.com

शोध सार :

मनुष्य का समाज एवं वातावरण से घनिष्ठ संबंध है। वातावरण का प्रभाव प्रत्येक मनुष्य पर पड़ना स्वाभाविक है, उस पर तो और अधिक जो सर्जक व्यक्तित्व लिए हुए हो। साहित्य को मनुष्य की संवेदनाओं का कोश कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें मनुष्य की समस्त चेष्टाएँ समाहित रहती हैं। हिंदी में गद्य साहित्य का आरंभ आधुनिक काल से होता है। प्रारंभिक उपन्यास जादुई, तिलिस्मी एवं परियों की कहानियों पर केंद्रित था, जो कल्पना द्वारा पाठकों का मनोरंजन करता था। प्रेमचंद के आगमन ने हिंदी उपन्यास साहित्य में यथार्थ को आकार दिया और उन्हें उपन्यास सम्राट की उपाधि से विभूषित किया गया। प्रेमचंद के समकक्ष ही उपन्यास साहित्य में वृन्दावन लाल वर्मा का भी पदार्पण हुआ। उन्होंने भी प्रेमचंद के समान सामंती व्यवस्था, सांप्रदायिकता, गरीबी, जाति व्यवस्था और समाज में प्रचलित सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के खिलाफ आवाज उठाई। साथ ही उन्होंने दहेज प्रथा, विधवा विवाह, कृषकों की समस्या और महिलाओं के खिलाफ हो रहे भेदभाव के खिलाफ भी लिखा। वैसे तो हिंदी कथा साहित्य में वृन्दावन वर्मा के आगमन से पूर्व ही समाज में फैली तमाम विसंगतियों को दूर करने के लिए भारतवर्ष में चतुर्दिक समाज सुधारकों द्वारा आंदोलन छिड़ चुका था। वर्मा जी एक जागरूक चिंतक एवं मनीषी थे, उनके सामने वर्तमान सामाजिक विद्रूपताएँ एवं समस्याएँ थीं, जिसने उन्हें उपन्यास लेखन के लिए प्रेरित किया।

बीज शब्द :

पूँजीवादी व्यवस्था, धर्म परिवर्तन, विधवा विवाह, सहकारी समिति, दहेज प्रथा, पूँजीपति, स्त्री स्वातंत्र्य आदि।

मूल आलेख :

तत्कालीन युग में सामाजिक एवं धार्मिक बंधन इतने जटिल हो गए थे कि जीवन के विकास की गति ही रुक गई थी। मनुष्य घुट-घुट कर जीवन

जीने के लिए विवश था। पूँजीवादी व्यवस्था का बोलबाला था। ऐसी स्थिति में युगीन लेखकों ने विभिन्न समस्याओं को अपनी रचना के केंद्र में रखकर सामान्य जनता को प्रेरित करने का कार्य किया। वर्मा जी ने भी अपने चारों ओर के परिवेश से प्रेरणा ली और विभिन्न सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित किया। उन्होंने कुल ग्यारह सामाजिक उपन्यास लिखे, जिनमें उन्होंने छुआछूत, ऊँच-नीच, विधवा-विवाह एवं धर्म परिवर्तन इत्यादि अनेक समस्याओं का सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया है। वर्मा जी का प्रथम सामाजिक उपन्यास 'लगन' 1927 में लिखा गया था। इस उपन्यास की समस्या मुख्यत: दहेज की समस्या है। बजटा गाँव के शिवुमाते के पुत्र देवसिंह का विवाह बरौल गाँव के बादल चौधरी की कन्या रामा से हो जाता है, किंतु दहेज में सौ भैंसें न मिलने के कारण वे वधू की विदा नहीं कराते हैं और कहते हैं-'बहू को विदा न कराएँगे। भैया का दूसरा विवाह होगा। उसका अंग-अंग ब्याह जा सकता है। लड़कियों की संसार में कोई टूट नहीं है।'[1] तत्कालीन समाज में लड़कियों के पुनर्विवाह को हेय दृष्टि से देखा जाता था, जबकि पुरुष को यह अधिकार था कि वह एक नहीं, दो-चार विवाह भी कर सकता था। तभी तो देव सिंह के अंग-अंग ब्याहे जाने की बात की जाती है, किंतु रामा और देव सिंह दोनों दूसरा विवाह नहीं करना चाहते। भारतीय नारी को एक विवाह में आस्था एवं पति परायणता का गुण संस्कार में मिलता है, इसलिए पन्नालाल से विवाह होने की बात पर रामा कहती है-'बस ये बातें हमसे न कहा करो। जो भाग्य में बदा होगा, सो तो होगा ही, पर अभी से कुछ न बको।'[2] वास्तव में रामा की पति-भक्ति एवं उसकी पवित्रता तथा देव सिंह के प्रयासों के फलस्वरूप दोनों का मिलन होता है।

1927 में ही लिखा गया 'संगम' उपन्यास भी समस्या प्रधान उपन्यास है। इसमें लेखक ने जाति बंधन की समस्या, संपत्ति पर अधिकार की समस्या एवं डाकुओं की समस्या को उद्घाटित किया है। धनीराम जाति का नाई है और वह अनाथ ब्राह्मण कन्या का पालन-पोषण

करता है। नाई के यहाँ पली होने के कारण उसका विवाह ब्राह्मण कुल में नहीं हो पा रहा था, किंतु दोनों का लोभी भिखारीलाल अपने बेटे का विवाह कर देता है। दूसरी तरफ रामचरण डाकू सुखलाल और अहीरिन जाति से जन्मा पुत्र है। धर्म के ठेकेदार सुखलाल को जाति बहिष्कार करते हैं, किंतु सुखलाल विधवा गंगा से रामचरण का विवाह कराकर स्पष्ट कहता है-'मैं अब बिरादरी की या किसी की भी रत्तीभर परवाह नहीं करता।'[3] दूसरी समस्या संपत्ति में अधिकार की है। सुखलाल की बहन को उसकी मृत्यु के पश्चात अदालत संपत्ति से बेदखल कर देती है, तब वर्मा जी कहलवाते हैं-'हमारे हिंदू शास्त्र। अनाथ विधवा बहिन को अपने प्यारे मृत भाई के मकान की एक छोटी कोठरी में रहने तक का हक नहीं दे और तेरहवीं पीढ़ी के लुच्चे लफंगे कुटुंबी को सब जायदाद हड़प कर जाने का विधिवत अधिकार है।'[4] वर्मा जी शास्त्र की बातों को उतना महत्व नहीं देते, क्योंकि उनके अनुसार एक पिता या भाई की संपत्ति में बहन एवं बेटी को भी बराबर का अधिकार है।

इस उपन्यास में वर्मा जी ने डाकुओं की समस्या का भी समाधान कराया है। अस्पताल में मृत्यु से पहले डाकू लालमन जब थोड़ी देर के लिए चैतन्य अवस्था में आता है तो वह डाकू बनने के कारण एवं समस्या पर कहता है-'साधारण परिश्रम से बहुत-सी संपत्ति मिलती न देखकर मैंने वह काम शुरू किया था। बहुत डाके डाले और बहुतेरों को मारा, जिसका न मालूम मुझे क्या दंड मिलेगा, परंतु मैंने बूढ़ों एवं स्त्रियों के ऊपर कभी हाथ नहीं डाला।'[5] लालमन एक डाकू था, लेकिन उसके हृदय में मानवता की भावना भरी हुई थी।

'प्रत्यागत' उपन्यास में वर्मा जी ने मलाबार में बलपूर्वक हिंदू को मुसलमान बनाए जाने की समस्या को चित्रित किया है। बाँदा के धर्मभीरू ज्योतिषी पं. टीकाराम का इकलौता बेटा मंगलदास धनोपार्जन के लिए बंबई (पूना) जाता है, जहाँ उसकी भेंट मुसलमान रहमतुल्ला से होती है और वह उसके साथ मलाबार पहुँच जाता है। वहाँ एक मस्जिद में नमाज पढ़ने के समय बलपूर्वक उसे मुसलमान बना दिया जाता है। यहाँ पं. टीकाराम स्वयं टिप्पणी देते हुए कहते हैं-'विधर्मी को धर्म में वापस कभी नहीं लिया जा सकता।'[6] आर्य समाज के आगमन से धीरे-धीरे लोगों की विचारधारा में परिवर्तन आया, इसलिए इस उपन्यास में धार्मिक अंधविश्वास और उन पर समाज के ठेकेदारों के आपसी द्वंद्व का सुंदर और स्वाभाविक चित्रण किया गया है। साथ ही मंगलदास को पुन: हिंदू धर्म में परिवर्तित कराकर हिंदुओं में उच्च जाति के व्यक्तियों के जातीय अभिमान और दुराग्रह को भी प्रकट किया है।

'कुंडली चक्र' उपन्यास में असफल प्रेम एवं कुंडली मिलाकर विवाह कराए जाने के दुष्परिणाम और जमींदारों द्वारा किसानों पर अत्याचार एवं शोषण की समस्या को दर्शाया गया है। रतन का विवाह कुंडली मिलाकर किया जाता है, फिर भी वह खुश नहीं। इस उपन्यास की कथा सामग्री तत्कालीन समाज से एकत्रित की गई है। कुंडली चक्र की भूमिका में वे लिखते हैं-'अजित और पूना के संबंध की घटनाएँ, जो इस उपन्यास में लिखी गई हैं, सच्ची हैं, परंतु थोड़े से हेर-फेर के साथ लिखी गई हैं।'[7] उपन्यास में तत्कालीन समाज में जमींदारों का वर्चस्व और अत्याचार इतना अधिक था कि उनका विरोध करने का साहस किसी में भी नहीं था, किंतु इस उपन्यास का पात्र अजित सशक्त एवं कर्मठ पात्र है। उपन्यास की स्त्री पात्र पूना पर जो अत्याचार होता है, उस संदर्भ में वह सोचता है-'अभी तक दरिद्र किसानों के ऊपर वार होता था, अब दीन स्त्रियों की बारी आई है। जो कुछ बन सकेगा, अवश्य करूँगा।'[8] अर्थात वर्मा जी स्त्री शोषण के भी विरोधी थे।

अकालग्रस्त किसानों एवं असफल प्रेम की समस्या को 'प्रेम की भेंट' उपन्यास में दर्शाया गया है। इसमें झाँसी के पास तालबेहट नामक ग्राम के कम्मोद किसान और पढ़े-लिखे युवक धीरज की कथा है। वर्षा न होने के कारण किसान झाँसी छोड़कर भोपाल रियासत जा रहे थे, किंतु धीरज जो कम्मोद का रिश्तेदार था, वह खेती में डटकर मेहनत करता है-'धीरज पढ़ा-लिखा युवक है। इसके उपरांत भी कृषि को प्राथमिकता देता है। अकाल के प्रकोप में उसे अपना गाँव छोड़ना पड़ता है। अपने पैतृक गृह से उसे इतना मोह है कि वह इस अवस्था में भी मालवा न जाकर केवल तालबेहट जाता है।'[9] इस उपन्यास में धीरज एवं सरस्वती के असफल प्रेम की, नंदन का सरस्वती से एक तरफा प्रेम की, उजियारी का धीरज के प्रति एक पक्षीय प्रेम एवं उसकी असफलता को उजागर किया गया है। धीरज एवं सरस्वती की प्रेमकथा के विषय में वर्मा जी लिखते हैं कि -'छतरपुर रियासत के एक गाँव में एक युवक का गाँव की सुंदर लड़की से प्रेम हो जाता है। लड़की के माँ-बाप को इस प्रणय संबंध की सूचना मिल जाती है। वे लड़का एवं लड़की को एक-दूसरे से मिलने नहीं देते हैं। लड़की मर जाती है, जिसकी सूचना लड़के को उस घर की टहलनी से मिलती है। वह लड़की की ओढ़नी को चीरकर अपने सिर से बाँध लेता है और बाद में वह पागल हो जाता है।'[10]

'कभी न कभी' उपन्यास की मुख्य समस्या मजदूरों के सामाजिक एवं आर्थिक शोषण की समस्या है। मजदूरों का शोषण करने वाले केवल पूँजीपति ही नहीं, अपितु निम्न वर्ग का मेट भी उनका शोषण करता है और उनकी इज्जत से खेलने की कोशिश करता है। वर्मा जी ने इस उपन्यास में मजदूरों का संघर्ष एवं उनकी गरीबी का यथार्थ चित्रण किया है-'झाँसी जिले के चिरगाँव-रामनगर के मध्य 1941-42 में सड़क एवं पुल बनाने वाले मजदूरों एवं उनके शोषण का यथार्थ चित्रण गाथा है।'[11] समाजवादी दृष्टि एवं समाजवादी मूल्यों में वर्मा जी की आस्था है, मजदूरों के संघर्ष में उनका विश्वास है। वह देवजू और लछमन में देवजू को अधिक यथार्थवादी मानते हैं। मेट के अत्याचार पर देवजू उसका विरोध करता है और कहता है-'बिना लड़ाई के संसार में काम नहीं चलता। जितना दबो उतना ही मरो, जितना दाबो उतना जिओ।'[12] लीला का पिता हीरालाल भी यथार्थ में जीने वाला साधारण-सा मजदूर है, किंतु वह अधिक दृढ़ चरित्र वाला नहीं है, अपितु लीला दृढ़ एवं स्वाभिमानी नारी है, वह प्रेम करती है पर यह भी कहती है कि -'औरतें मोम की बनी नहीं होतीं।'[13] वस्तुतः यह दिखाई देता है कि वर्मा जी ने इसमें मजदूरों की समस्या के साथ-साथ स्त्री स्वातंत्र्य को भी दर्शाया है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात 1948 में वर्मा जी का उपन्यास 'अचल मेरा कोई' प्रकाशित होता है, जिसमें उन्होंने स्त्री स्वातंत्र्य की समस्या को उद्घाटित किया है। साथ ही पति का स्वामित्व, विधवा पुनर्विवाह, पारिवारिक कलह, पुलिस अत्याचार इत्यादि समस्याओं को भी उजागर किया गया है। इसमें स्त्री स्वतंत्रता की बात बार-बार उठती है। देश की स्वतंत्रता में भी स्त्री स्वातंत्र्य को महत्व देते हुए वर्मा जी लिखते हैं-'ठीक अर्थ में इस देश को स्वाधीन उस दिन कहा जाएगा, जिस दिन यहाँ की स्त्रियाँ स्वतंत्र हो जाएँगी।'[14] स्त्री की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए सबसे पहले लेखक ने उसे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की बात की है, किंतु आज की स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बाद भी मानसिक गुलामी से मुक्त नहीं हो पाई है। साथ ही वर्मा जी ने इसमें गांधीवादी युग के अहिंसात्मक एवं सशस्त्र प्रतिरोध [illegible] समस्या को भी उठाया है। उपन्यास का पात्र [illegible] कांग्रेस और महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए अहिंसात्मक आंदोलन से प्रभावित है, इसके लिए उसे जेल भी जाना पड़ता है। पुलिस अधिकारी आम आदमी का शोषण [illegible] उत्पीड़न करते हैं। इनके उत्पीड़न के प्रतिरोध के लिए आम आदमी जागरूक हो गया है और हथियार भी [illegible] लगा है, पंचम कहता है-'स्वराज्य के लिए बहुत [illegible] इकट्ठा कर लिया है। इशारा पाते ही बस।'[15] इस उपन्यास की संरचना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर की गई है।

'सोना' उपन्यास लोक कथा पर आधारित है। इसमें असफल प्रेम एवं अनमेल विवाह की समस्या को दर्शाया गया है। अनमेल विवाह का संबंध निश्चित रूप से दहेज प्रथा से था। प्रेमचंद ने भी अनमेल विवाह और दहेज प्रथा की समस्या को अपने उपन्यासों में [illegible] किया है। आर्थिक विषमताओं से जूझता सोना का [illegible] उसका विवाह बूढ़े, विधुर एवं लँगड़े राजा से कर देता है। सोना, राजा से ऊबकर आभूषणों की तरफ ध्यान [illegible] और इधर सोना का ध्यान आभूषणों की तरफ से हटाने के लिए राजा मंदिर का निर्माण कराता है। इसके साथ ही लेखक ने इसमें अंधविश्वास, निर्धनता इत्यादि की समस्या को भी उठाया है। उपन्यास के माध्यम से यह [illegible] गया है कि दैवीय अनुकंपा के बिना, श्रम के [illegible] जीवन की जटिलताओं को सुगम एवं सुखी बनाया जा सकता है-'मेहनत, सफाई और कला की उपासना से सच्चे जीवन का बड़प्पन मिलता है।'[16]

सहकारी आंदोलन पर 1952 में लिखा गया 'अमरबेल' उपन्यास सहकारिता के साथ-साथ कई [illegible] समस्याओं को उजागर करता है, जिसमें पूँजीवाद, समाजवाद, भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वार्थ जैसे व्यापक जीवन की समस्याएँ उठाई गई हैं। वर्मा जी ने सहकारिता को अध्यात्मवाद और व्यक्तिवाद से जोड़ने वाली एक मजबूत कड़ी माना। सहकारिता में व्यक्ति अपने स्वार्थ को त्यागकर [illegible] समाज को स्वीकार करता है और यही व्यक्ति [illegible] अध्यात्म अथवा आदर्श है। वे डॉ. सनेही से कहलवाते हैं-'अध्यात्म के लिए विज्ञान की सहायता आवश्यक है।'[17] अर्थात अध्यात्म जीवन का उद्देश्य है और उसकी सहायता के लिए विज्ञान आवश्यक है। देशराज और बनमाली दोनों सहकारी कृषि के विरोधी हैं। स्वाधीनता के पहले देशराज और उसके कारिंदे किसानों का शोषण करते थे, किंतु जमींदारी उन्मूलन के पश्चात सहकारी खेती द्वारा गाँवों के विकास के लिए कलक्टर के पास एक पत्र आता है कि-'बढ़ती हुई जनसंख्या, अन्न संकट और व्यापक बेकारी की समस्याओं का सामना करने के लिए सहकारी कृषि और सहकारी कुटीर उद्योगों को विकसित और उन्नत करना बहुत जरूरी है।'[18] साथ ही उपन्यास में अहिंसा द्वारा हिंसा पर विजय प्राप्त करना और अहिंसात्मक आंदोलन को ही सामाजिक उत्थान का श्रेष्ठ माध्यम बताया गया है।

आगे वर्मा जी ने सरकारी अधिकारियों के लक्षण बताते हुए करारा व्यंग्य किया है-'आतंक जमाना, भत्ता सीधा करना और संस्थाओं पर अमरबेल की तरह छाये रहना ही इनका काम है।'[19] डॉ. सनेही अहिंसा के पुजारी एवं गांधी जी के विचारों से प्रभावित इस उपन्यास के सशक्त पात्र हैं, उन्होंने टहल एवं हरको का विवाह कराकर समाज में विधवा विवाह की समस्या का समाधान कराया है।

जमींदारी प्रथा उन्मूलन के पश्चात जमींदारों की दयनीय आर्थिक स्थिति का चित्रण 'आहत' उपन्यास में किया गया है। जमींदारी प्रथा समाप्त होने बाद भी अंगद अपने को जमींदार मानता है। वह दमरू किसान पर अत्याचार करता है। दमरू सीधा-सादा ईमानदार किसान है। वह अंगद की बहुत-सी अन्यायपूर्ण बातों को मान लेता है फिर भी उसे अपनी अस्मिता का बोध है। अंगद का झूठा दंभ अपने को जमींदार ही मानता है, वह कहता है-'रईसों के पुरखों ने रियासतें और हमारे पुरखों ने रक्त की नदियाँ बहाकर कमाई हैं। ऐसे ही नहीं मिट सकतीं।'[20] तब दमरू गोदान की होरी की तरह अंगद की हाँ में हाँ मिलाता है और सोचता है कि भगवान की विचित्र माया है। वर्मा जी चूँकि दहेज प्रथा के घोर विरोधी थे, इसलिए विवाह के मंडप में जब छाया का होने वाला पति दहेज के लिए विवाह करने से मना कर देता है, तब छाया ललकारती है-'है कोई ऐसा साहसी जो मेरे साथ ब्याह करने के लिए तैयार हो।'[21] इस अवसर पर वर्मा जी ने बिना दहेज के दीप और छाया का विवाह कराकर दहेज जैसी समस्या का भी समाधान कराया है।

'उदय किरण' उपन्यास भी सहकारिता के स्वरूप एवं उससे संबंधित समस्याओं का उद्घाटन करता है। इसमें कृषि के साधनों की कमी, पारस्परिक वैमनस्य, निर्धनता, अशिक्षा, डाकुओं की समस्या, सरकारी कर्मचारियों का शोषण इत्यादि समस्याओं का चित्रण एवं उसका समाधान प्रस्तुत किया गया है। इसमें सरकारी शोषण, गाँव की गरीबी, खेती की समस्याएँ इत्यादि कथा पर मोले एवं छोटे महतो से जुड़ी हुई है। मगन मजदूरों के शोषण का विरोध करता है और कहता है-'बहुत दिन तो रहे मजदूर अधमरे, अब भगवान उनके भी दिन फेरने वाले हैं।'[22] साथ ही इसमें स्त्री-पुरुष समता, नारी शक्ति का उत्थान, शिक्षा का प्रसार इत्यादि समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने अनादिकाल से पीड़ित, शोषित, दलित गरीब किसानों को सहकारी खेती के द्वारा अपनी दयनीय आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाने की प्रेरणा दी है। सहकारिता वर्मा जी के व्यक्तिगत जीवन का अनुभव है, उन्होंने लिखा है-'सबसे पहली सहकारी खेती समिति हम लोगों के प्रयत्न से झाँसी जिले में ही स्थापित हुई।'[23]

निष्कर्ष :

वृन्दावन लाल वर्मा ने सभी उपन्यासों की रचना उद्देश्यपूर्ण की है। तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों का मनोयोगपूर्वक चित्रण किया है, साथ ही उसका समाधान भी कराया है। प्रेमचंद के समान अपने सहज एवं सरस शैली से कथा में सरसता बनाए रखते हैं। वर्मा जी लोक हृदय की बात करते हैं, जिससे वह पाठकों को भी आत्मीयता से बाँधे रखते हैं। उनमें स्वयं समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा था। वातावरण में फैली विभिन्न घटनाओं के जाल से ऐसी घटनाएँ निकाल लेते हैं, जो पाठकों को प्रभावित किए बिना नहीं रहतीं और पाठक भी उसे अनंतकाल तक भूल नहीं पाता है। ❑

संदर्भ सूत्र :
1. लगन-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-1 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 225
2. वही, पृष्ठ 236
3. संगम-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-1 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 370
4. वही, पृष्ठ 361
5. वही, पृष्ठ 364-65
6. प्रत्यागत-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-1 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 391
7. कुण्डली चक्र-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-1 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 900
8. वही, पृष्ठ 540
9. वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन (शोध प्रबंध)-डॉ. उषा भटनागर, पृष्ठ 118
10. प्रेम की भेंट परिचय-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-1 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 900
11. कभी न कभी परिचय -वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-2 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 1
12. कभी न कभी-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-2 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 107
13. वही, पृष्ठ 108
14. अचल मेरा कोई-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-2 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 354
15. वही, पृष्ठ 389
16. वृन्दावनलाल वर्मा-डॉ. प्रभाकर माचवे, पृष्ठ 60
17. अमरबेल-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-4 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 412
18. वही, पृष्ठ 436
19. वही, पृष्ठ 493
20. आहत-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-5 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 317
21. वही, पृष्ठ 424
22. उदय किरण-वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, भाग-5 सं. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, पृष्ठ 509
23. वही, पृष्ठ 1003

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

जनजातीय विमर्श के आईने में 'रूपतिल्ली की कथा'

प्रो. यशवंत सिंह

प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय, काँचीपुर
इंफाल-795003 (मणिपुर)
मो. 9612169840
ई-मेल : dryashwantsingh66@gmail.com

भारतीय समाज व संस्कृति की विशिष्टता अपने-आप में अनूठी है। इसका मुख्य कारण यहाँ के निवासियों की विभिन्न सांस्कृतिक अस्मिताएँ हैं। जो अपने में एक ओर जहाँ अक्षुण्ण हैं, वहीं दूसरी ओर इनकी एकात्मता भारतीय अस्मिता का पर्याय है। इसीलिए भारत को 'अनेकता में एकता' का देश कहा जाता है। इसकी सामाजिक संरचना में विभिन्न प्रजातीय तत्वों का सम्मिश्रण कभी-कभी इसे विविध प्रजातियों का अजायबघर भी बना देता है। यहाँ के वन-प्रांतरों तथा पर्वतीय-क्षेत्रों में निवास करने वाले अनेक मानव समुदाय सभ्यता के विकासक्रम में विभिन्न कारणोंवश पृथक रह गये, फलतः आधुनिक सभ्यता के विकास का प्रकाश उन तक नहीं पहुँच पाया, वे विकास की दृष्टि से प्रारम्भिक सोपानों पर ही रह गये। इन्हीं मानव समुदायों को सभ्य-समाज के लोगों ने असभ्य मानकर इनको आदिवासी, जनजाति, आदिमजाति, वन्य-जाति, वनवासी, गिरिवासी, मूलवासी इत्यादि विविध नामों से अभिहित किया। इनमें से प्रत्येक मानव समुदाय का अपना विशिष्ट नाम, पृथक निवास-स्थान एवं अनूठी सांस्कृतिक परम्परा व पहचान है। लेकिन विकास की दृष्टि से पिछड़े होने तथा बाहरी समाज से मिलने-जुलने में झिझक होने के कारण इतिहास की विडम्बना ने इन मानव समुदायों को मुख्य समाज से अलग-थलग ही रखा। उन्हें मुख्य समाज के लोगों से आत्मसात होने का मौका ही नहीं मिला। अतः वे मुख्य समाज के लोगों के लिए अजूबे की तरह रहे, जबकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने इन्हें मूलवासी माना जो **'किसी भू-भाग पर प्राचीन काल से रहने वाले मानव समुदाय के वंशज हैं तथा नस्ल एवं संस्कृति के स्तर पर विशिष्टता से अलग-थलग अपने पुरखों की परम्परा एवं रीतिरिवाजों का संरक्षण करते हुए जीवन जीते चले आ रहे हैं और विकसित राष्ट्रीय, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को वे लोग बाहरी (एलियन) मानते हैं।'**[1]

आधुनिक भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि अपने साम्राज्य विस्तार के दौरान अंग्रेजों ने जहाँ-जहाँ जनजातीय क्षेत्रों में प्रवेश किया, वहाँ के निवासियों को भारत के मुख्य समाज से अलगाने हेतु उन्हें नेटिव यानि देशी या ट्राइब यानि आदिवासी की संज्ञा प्रदान की तथा इनके निवास-क्षेत्रों को प्रतिबंधित एवं अलग क्षेत्र घोषित किया।

ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका

वर्ष - 17 अंक : 02 (पूर्णांक - 66) जुलाई-अगस्त, 2023

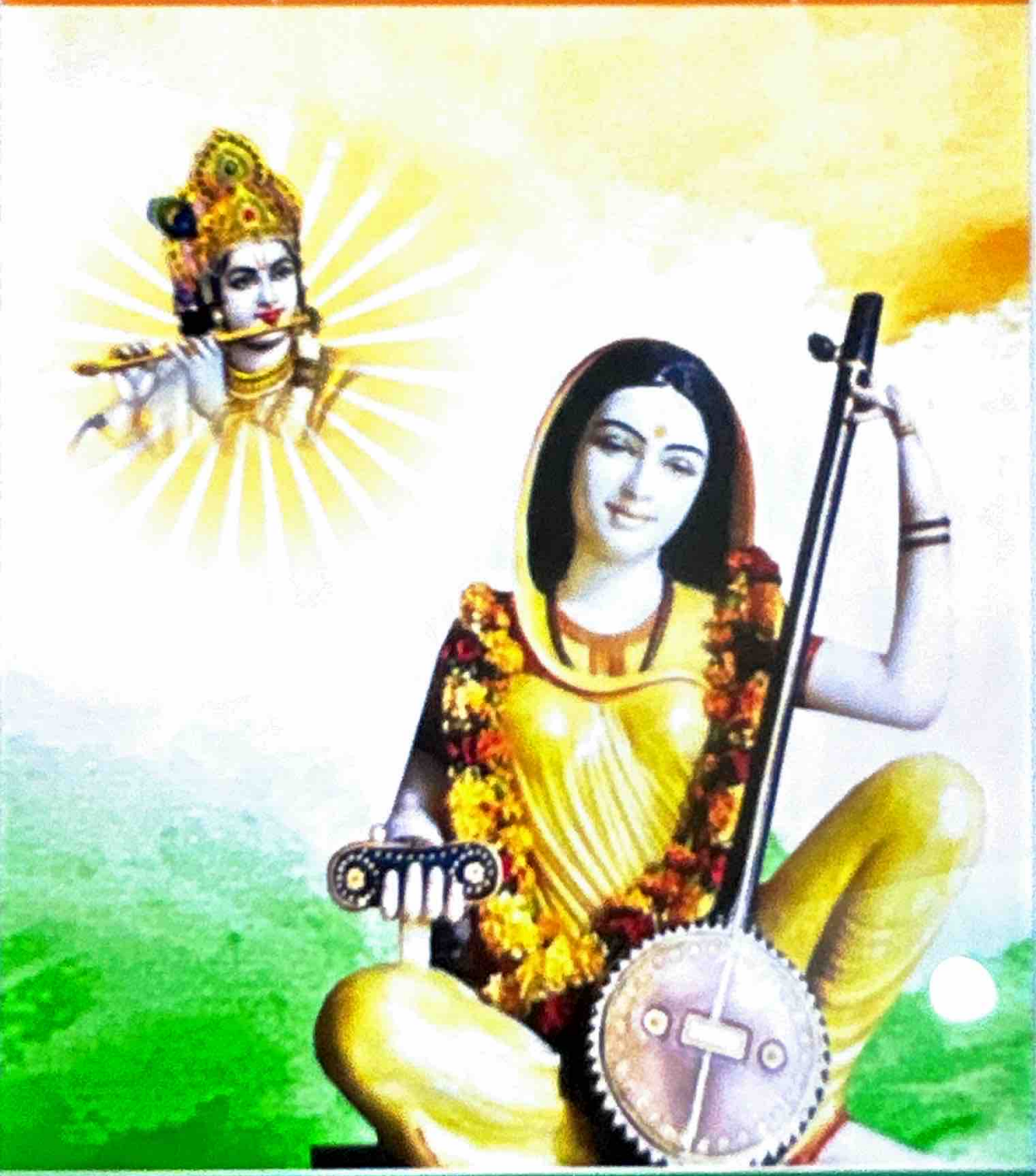

मीरा स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़ की बहुअनुशासनिक त्रैमासिक शोधपत्रिका

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

प्रबन्ध मण्डल

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - RAJHIN/2007/19628
ISSN 2455-6033

मीरायन

(साहित्यिक-सांस्कृतिक त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका

वर्ष-17, अंक-02 (पूर्णांक-66) जून - अगस्त, 2023

सहयोग राशि

वार्षिक:
व्यक्तिगत : 300.00 रुपया
संस्थागत : 400.00 रुपया
आजीवन (दस वर्षीय)
व्यक्तिगत : 3000.00 रुपया
संस्थागत : 4000.00 रुपया
सहयोग राशि मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के पक्ष में नकद/मनी आर्डर/चैक/ बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवाई जा सकती है।

संस्थापक सम्पादक
कीर्तिशेष स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती

सम्पादक
सत्यनारायण समदानी

कार्यालय एवं सम्पर्क-सूत्र
मीरा स्मृति संस्थान
मकान नं. 25, फ्रेण्ड्स कॉलोनी,
पार्वती गार्डन के पीछे, सेंथी,
चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)
मो. 094141-48537

ई-मेल :
samdanisatya@gmail.com

मीरायन के बैंक खाता का विवरण

1. खाता का नाम	मीरा स्मृति संस्थान (MEERA SMRITI SANSTHAN)
2. खाता संख्या	SB A/c 51042428405
3. बैंक शाखा	भारतीय स्टेट बैंक, कलक्टरेट शाखा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
4. IFSC	SBIN0031237

प्रकाशन-तिथि
15 अगस्त, 2023

Designed by: उमेश अजमेरा, श्रीजी डॉट कॉम, चित्तौड़गढ़-9829079159

समस्त सम्पादकीय सहयोग अवैतनिक एवं मानद है। रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवाद चित्तौड़गढ़ न्यायाधिकरण क्षेत्र के अधीन होंगे।

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	05
	1. **सन्त मीराबाई**	
	(1) हरि सूँ गरब किया.......... (2) जदुबर लागत है.........	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	06
	2. **श्री गोपीनाथ पारीक 'गोपेश'**, जयपुर (राजस्थान)	
	ओ मतवाली मीरा	
3.	**सम्पादकीय**	07–10
	3. **प्रो. सत्यनारायण समदानी**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	
	अमर शहीद क्रान्तिकारी प्रतापसिंह बारहठ	
4.	**मीरा सन्दर्भपक्ष**	
	4. **श्रीमती हेमलता मंडोवरा**, कपासन (राजस्थान)	11–15
	मीरां के काव्य में भारतीय अध्यात्म-चिन्तन	
	5. **डॉ. विमलेश शर्मा**, अजमेर (राजस्थान)	16–21
	मीरां का काव्य : आध्यात्मिक गलियारों में गूँजता प्रतिरोध	
	6. **डॉ. राजल गुप्ता**, रोहतक (हरियाणा)	22–27
	मीरा व महामति प्राणनाथ की वाणी में वर्णित भाव : 'बैद सांवरो होय'	
5.	**सन्त-भक्तपक्ष**	
	7. **डॉ. सुनीता अवस्थी**, ब्यावर (राजस्थान)	28–32
	कबीर के सिद्धान्तों पर वैदिक साहित्य का प्रभाव	
	8. **डॉ. शेफालिका पालावत**, जयपुर (राजस्थान)	33–37
	'मलय की मीरा' समानबाई का कृष्ण-काव्य	
	9. **डॉ. विनोद कुमार**, जालन्धर (पंजाब)	38–46
	गोरखनाथ की वाणी में नैतिकता के प्रतिमान	
	10. **डॉ. कन्नाराम मीना**, दिल्ली	47–53
	भारत की सन्त परम्परा में मानवतावादी चेतना	
	11. **डॉ. हरप्रसाद शर्मा**, भोपाल (मध्यप्रदेश)	54–57
	तुलसी की दृष्टि में नारी	

6. वैदिक वाङ्मय पक्ष

12. **डॉ. प्रशान्त सिंह,** प्रयागराज (उत्तरप्रदेश) 58–62
वैदिक युगीन पर्यावरण चिन्तन : एक अनुशीलन

13. **प्रो (डॉ.) मूलचन्द,** चुरू (राजस्थान) 63–67
विश्वशान्ति में श्रीमद्भगवद् गीता की प्रासंगिकता

14. **डॉ. वर्षा एच.पटेल,** शामलाजी (गुजरात) 68–73
पुराण साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

7. इतिहासपक्ष

15. **डॉ. प्रीति पाण्डे,** उज्जैन (मध्यप्रदेश) 74–77
प्राचीन भारतीय शिक्षा में नवीन शिक्षा नीति (2020) के तत्त्व

16. **श्वेता नेहा,** वाराणसी (उत्तरप्रदेश) 78–81
स्थायी बंदोबस्त और ग्रामीण समाज में परिवर्तन

17. **डॉ. सुनन्दा कुमारी,** शिवहर (बिहार) 82–86
19वीं सदी में भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान में
समाज सुधारकों का योगदान

18. **डॉ. डी.के. चारण,** चुरू (राजस्थान) 87–89
प्राचीन भारत में इतिहासबोध

19. **डॉ. दिनेश महाजन,** इन्दौर (मध्यप्रदेश) 90–94
इन्दौर का ऐतिहासिक नर्मदा आन्दोलन

8. कला-संस्कृति पक्ष

20. **डॉ. दर्मियानसिंह भण्डारी,** टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) 95–101
गढ़वाल हिमालय में देव संस्कृति आधारित न्याय व्यवस्था

21. **विक्रम झा,** बीकानेर (राजस्थान) 102–105
चित्तौड़गढ़ किले के चित्रांग तालाब की तीन विशिष्ट अप्रकाशित प्रतिमाएँ

22. **ललित शर्मा,** झालावाड़ (राजस्थान) 106–111
आगर मालवा क्षेत्र की पुराकला निधियाँ

9. काव्य साहित्य पक्ष

23. **डॉ. शशिकला,** वाराणसी (उत्तरप्रदेश) 112–120
कुँवर नारायण की कविताएँ : यथार्थ जीवन का दस्तावेज

कुँवर नारायण की कविताएँ : यथार्थ जीवन का दस्तावेज

- डॉ. शशिकला

नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर एवं तीसरे सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में कुँवर नारायण का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनका साहित्य, इतिहास एवं मिथक के जरिये वर्तमान को देखने के लिए जाना जाता है। हिन्दी के मुखर कवि होने के साथ-साथ कला के अन्य क्षेत्रों में भी उनका मन खूब रमा है, विशेषकर शास्त्रीय संगीत एवं सिनेमा में उनकी गहरी रुचि रही है। भारतीय साहित्य में कुँवर नारायण की उपस्थिति, इतिहास और मिथक के साथ आधुनिकता में भी दिखाई देती है। कविता लेखन में इनकी विशेष रुचि रही है, इनकी कविताएँ सामाजिक उद्देश्य के साथ एक अनिवार्य संरचना कायम करती हैं। कविता के साथ कहानी लेखन, समीक्षा, सिनेमा, रंगमंच, संगीत एव कला में भी उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक समालोचक के रूप में उनकी आलोचना, निबन्ध, डायरी, सिने विवेचन और भेंटवार्ताओं की पुस्तकों में, साहित्य, कला, जीवन, समाज एवं राजनीति तथा संस्कृति पर उनका चिन्तन स्पष्ट दिखता है।

कुँवर नारायण ने अपनी कविता यात्रा में हमें कई महत्वपूर्ण संग्रह दिये हैं। चक्रव्यूह (1956), परिवेश: हम तुम (1961), अपने सामने (1979), कोई दूसरा नहीं (1993), इन दिनों (2002), हाशिए का गवाह (2009), आत्मजयी (1965), वाजश्रवा के बहाने (2008), कुमारजीव (2015)। आपको हिन्दी साहित्य के कई महत्वपूर्ण पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया है। सर्वप्रथम 1971 में आत्मजयी पर हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1992 में उनके कहानी संग्रह आकारों के आसपास पर उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रेमचन्द्र पुरस्कार, 1982 में केरल का कुमारन् आशन् पुरस्कार तथा इसी वर्ष मध्यप्रदेश द्वारा तुलसी पुरस्कार, 1987 में उन्हें दिल्ली साहित्य का विशिष्ट साहित्य रचना सम्मान प्राप्त हुआ। 1995 में कोई दूसरा नहीं काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी एवं व्यास सम्मान, 1995 में ही भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार तथा भारतीय भाषा परिषद द्वारा शतदल पुरस्कार भी मिला। 2001 में राष्ट्रीय कबीर सम्मान, 2009 में साहित्य का सर्वोत्कृष्ट सम्मान 41 वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2009 में ही उन्हें राष्ट्रीय सम्मान पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया। इन पुरस्कारों के अलावा उन्हें रोम के अन्तर्राष्ट्रीय प्रामिओ फेरोनिया पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

वर्ष 2009 में दो-दो बड़े पुरस्कारों का मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। यह केवल कुँवर नारायण का ही नहीं, संपूर्ण साहित्य जगत का सम्मान था। इसके बाद ही साहित्य जगत ने कुँवर नारायण को हाथों-हाथ लिया। आलोचक कृष्णदत्त पालीवाल का कथन है-''भारतीय ज्ञानपीठ ने कुँवर नारायण के कवि कर्म की तटनिष्ठ और तपसिद्ध भारतीय निर्विकार सर्जनात्मकता के प्रति जो सम्मान व्यक्त किया है वह वास्तव में भारतीय चिन्तन की वैदिक परम्परा, उपनिषद्, वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति और कबीर, प्रसाद, निराला और अज्ञेय का सम्मान है।''

कुँवर नारायण की पोलैण्ड यात्रा और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की भयानक त्रासदी तथा माता एवं बड़ी बहन की असामयिक मृत्यु ने इनके जीवन को गहरा आघात दिया, जिसकी दार्शनिक परिणति

चक्रव्यूह काव्य संग्रह में देखी जा सकती है। इनके लेखन की शुरूआत 20 वर्ष की अवस्था में ही अंग्रेजी भाषा में कविताएँ लिखने से हुई किन्तु काव्य यात्रा की मुकम्मल शुरूआत 1956 में चक्रव्यूह कविता संग्रह से होती है। कुँवर नारायण इस कविता संग्रह में इतिहास और मिथक के साथ अलग आधुनिकता बोध लेकर आते हैं जो हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। इस कविता संग्रह के महत्व के विषय में वे स्वयं कहते हैं-''चक्रव्यूह मेरे लिए मानसिक यात्रा रहा है। एक भटकता हुआ सौन्दर्यबोध जो जीवन को टटोलता है, स्वीकृत होने के लिए, एक सहानुभूतिपूर्ण स्पर्श के लिए।''

इस संग्रह की सबसे अन्तिम कविता चक्रव्यूह जिसमें अभिमन्यु एवं उसके चक्रव्यूह भेदन वाले कथानक को प्रतीक रूप में लिया गया है। यह प्रतीक अतीत संस्कृति से ग्रहण किया गया है और यह महाभारत के उपाख्यानों पर आधारित है। इसके कथानक की महत्ता दो दृष्टियों से है-प्रथम वह जो समाज में छला गया और दूसरा वह जो निर्भय होकर समाज से लड़ रहा है।

''यह महासंग्राम
जहाँ सदियों पुराना व्यूह, जो दुर्भेद्य था, टूटा
जहाँ अभिमन्यु कई आतंक से छूटा।
जहाँ उसने विजय के चन्द घातक पलों में जाना
कि छल के लिए उद्यत, व्यूह रक्षक वीर कायर हैं।''(चक्रव्यूह)

यहाँ यह बात ध्यान आकर्षित करती है कि चन्द घातक पल में भी संघर्षशील व्यक्ति अपने साहस का दामन नहीं छोड़ता है अपितु परंपराओं से, रूढ़ियों से संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध है। चक्रव्यूह में जिस टूटे हुए पहिए का बिम्ब कवि ने प्रस्तुत किया है वह साधनहीन, दीन दुःखी, लघु मानव का प्रतीक है अर्थात् लघुमानव के व्यक्तित्व को प्रतिष्ठापित करने के लिए इस प्रतीक को लिया है-

''वह जीव हूँ निष्पाप
जिसको पूजकर मारा गया
वह शीश जिसका रक्त सदियों तक बहा
वह दर्द जिसको बेगुनाहों ने सहा।''(चक्रव्यूह)

वह दर्द जिसको बेगुनाहों ने सहा अर्थात् वह साधनहीन व्यक्ति जो समाज में सदियों से संघर्ष ही करता रहा, उसका कोई गुनाह नहीं था परन्तु गुनहगारों की भाँति वह सदियों से दर्द सहता आ रहा है। यही नहीं समकालीन जीवन की परिस्थितियों को समझने के लिए कवि ने पौराणिक प्रतीकों की संवेदना और मिथक का प्रयोग गहराई से किया है। इन मिथकों के आधार पर आधुनिक परिस्थितियों को अधिक से अधिक प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया है-

''मैं नवागत वह अजित अभिमन्यु हूँ
प्रारब्ध जिसका गर्भ से ही हो चुका निश्चित
अपरिचित जिन्दगी के व्यूह में फेंका हुआ उन्माद
बांधी पंक्तियों को तोड़कर
क्रमशः लक्ष्य तक बढ़ता हुआ जय नाद।'' (चक्रव्यूह)

ऐसा साधनहीन व्यक्ति जिसका निर्धारण गर्भ में ही हो जाता है कि उसे इस संवेदनहीन संसार में संघर्ष और केवल संघर्ष ही करना है। महाभारत की इस प्रसिद्ध घटना को चित्रित कर कवि ने अभिमन्यु के संघर्ष को वर्तमान जीवन संघर्ष में जीवन्त कर दिया है।

कुँवर नारायण के साहित्य में वैविध्य है। वही वैविध्य जो नागार्जुन में है। इनके साहित्य का महत्व इसी से जाना जा सकता है कि इनकी कृतियों का अनुवाद लगभग पैंतीस भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में किया जा चुका है। कवि की मूलभूत विशेषता है कि वह साहित्य से सकारात्मक चीजें ही ग्रहण करते हैं। आज के इस संवेदनहीन समाज में गरीबों, मजदूरों का शोषण मनुष्यता का जीवन मूल्य बन गया है-

"हे राम
जीवन एक कटु यथार्थ है
और तुम महाकाव्य
तुम्हारे बस की नहीं
उस अविवेक पर विजय
जिसके दस बीस नहीं
अब लाखों सिर लाखों हाथ हैं
और विभीषण भी अब
न जाने किसके साथ है।" (अयोध्या, 1992)

इस भूमण्डलीकरण के युग में संवेदनहीनता ने इतनी गहरी पैठ बना ली है कि मूर्खों के विवेक पर विजय प्राप्त कर सकना आधुनिक युग के राम के वश की बात नहीं रह गयी है। आज मनुष्यता की यह विडम्बना है कि राम जो मर्यादा पुरुषोत्तम रूप लेकर अवतरित हुए थे वह भी इस संवेदनहीन समाज के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि विभीषण के रूप में रावण कौन है यह समझ पाना नामुमकिन है। इसी कविता में अयोध्या के विवादास्पद स्वरूप एवं अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु चुनावी राजनीति एवं राजनेताओं ने मनुष्य समाज को जंगल से भी अधिक बीहड़ बना दिया, जहाँ मनुष्य भरी भीड़ में खुद को असुरक्षित महसूस करता है-

"अयोध्या इस समय तुम्हारी अयोध्या नहीं
योद्धाओं की लंका है
मानस तुम्हारा चरित नहीं
चुनाव का डंका है।

X X X

अब के जंगल वो जंगल नहीं
जिनमें घूमा करते थे वाल्मीकि।" (अयोध्या, 1992)

जिस रामचरित मानस का नाम ले लेने से संपूर्ण भारतीय संस्कृति का दर्शन हो जाता था आज वह कवि को खतरे में नजर आ रहा है इसलिए कवि कहता कि- 'हे राम तुम लौट जाओ।' कुँवर नारायण समाज की ऐसी सारी व्यवस्थाओं पर प्रहार करते हैं, जिनमें मनुष्य के संवेदनशील बने रहने की स्वतंत्रता

गहराई में प्रवेश करता है तथा उसके लिए उत्तरदायी परिस्थितियों एवं कारणों की छानबीन भी करता है।

इनकी कविताओं में वर्तमान और मिथकीय इतिहास के मध्य जो आवा-जाही है, मिथकीय घटनाओं से वर्तमान संवेदना की जो टकराहटें हैं, काल और इतिहास का जो स्वअर्जित काव्य विवेक है और अनुभूति की जैसी शुद्धता है वह हिन्दी कविता के इतिहास में अन्यत्र कम दिखाई देती है। इनकी कविताओं को क्लैसिक्स की श्रेणी में रखा जा सकता है। इस सन्दर्भ में पंकज पराशर का कहना है-"कभी किसी कालिदास को कोई मल्लिनाथ, कभी किसी घनानन्द को ब्रजनाथ, कभी किसी निराला को रामविलास शर्मा मिल जाता है, तो आम जनों को भी ऐसे क्लैसिक्स का सच्चा आनन्द सुलभ हो जाता है.............. मुझे यह विश्वास है कि उनकी रचनाएँ समय के साथ अपनी शक्ति से क्लैसिक्स का दर्जा खुद ब खुद प्राप्त कर लेंगी।"[22] इस कथन से यह विश्वास हो जाता है कि कुँवर नारायण कालिदास, नागार्जुन, निराला की टक्कर के कवि हैं। निश्चित रूप से इनकी कविताओं का गहराई से अध्ययन किया जाय तो वह क्लैसिक्स की कोटि की ही ठहरती हैं।

संदर्भ सूत्र -

1- अन्वय : साहित्य के परिसर में कुँवर नारायण- सं0 ओम निश्चल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0-33

2-अन्विति : साहित्य के परिसर में कुँवर नारायण- सं0 ओम निश्चल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0-204

3-चक्रव्यूह(काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ0-46

4-वही, पृ0-45

5-वही, पृ0-44

6-कोई दूसरा नहीं (काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, पृ0-54

7-वही, पृ0-55

8-वही, पृ0-53

9- अन्वय : साहित्य के परिसर में कुँवर नारायण- सं0 ओम निश्चल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0-204

10-कोई दूसरा नहीं (काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, पृ0-55

11-अजनबी गुलाब-कुँवर नारायण, हिन्दी समय

12-कोई दूसरा नहीं (काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, पृ0-45

13-बाक़ी सीढ़ी भी पार- कुँवर नारायण, hindikunj.com

14-इन दिनों (काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, पृ0-35

15-अन्विति : साहित्य के परिसर में कुँवर नारायण- सं0 ओम निश्चल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0-246

16- इन दिनों (काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, पृ0-13

17-थोड़ा थोड़ा-कुँवर नारायण, कविता कोश

18-कोई दूसरा नहीं(काव्य संग्रह)-कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, पृ0-70

19-एक वृक्ष की [illegible]-कुँवर नारायण, hindwi.com

20-आत्मजयी- कुँवर नारायण, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ0-36

21-आत्मजयी- कुँवर नारायण, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ0-39

22-अन्वय : साहित्य के परिसर में कुँवर नारायण- सं0 ओम निश्चल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0-324

* एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

[illegible] कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)-221010

Email: shashi1.bhu10@gmail.com

केरल ज्योति

अक्तूबर 2023

ISSN 2320-9976
UGC Care - List

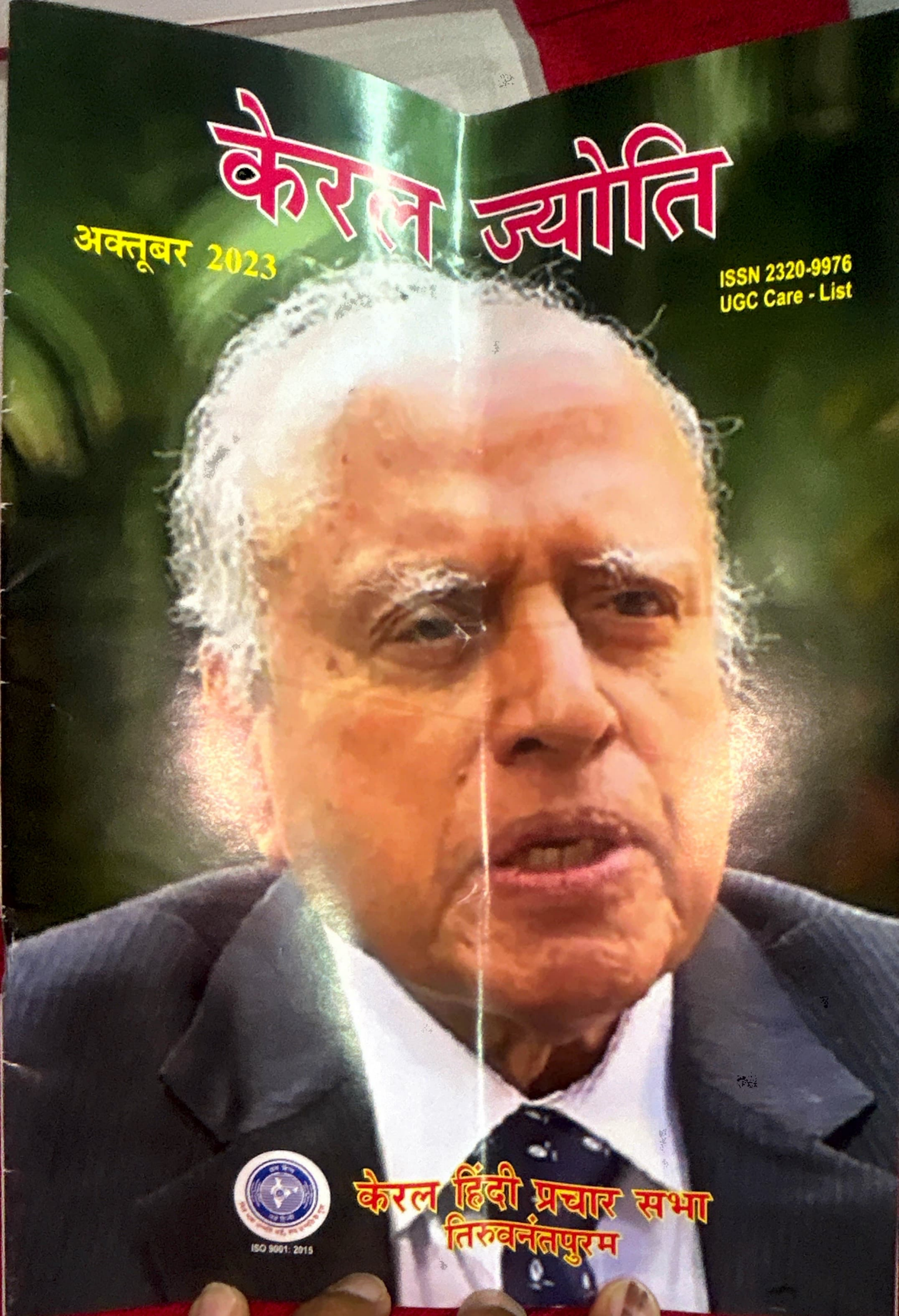

ISO 9001: 2015

केरल हिंदी प्रचार सभा
तिरुवनंतपुरम

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा की मुख पत्रिका

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति

प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ
डॉ. के.एम. मालती
प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन
प्रो.(डॉ). जयश्री.एस.आर

परामर्श मंडल

डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक

गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय दायित्व

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक

डॉ. रंजीत रविशैलम

संपादकीय मंडल

सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो.रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 60 दल : 7 अंक: **अक्तूबर 2023**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

मानवीकरण के रुजहान के तहत 'चंद्र गहना से लौटती बेर' **प्रो. (डॉ.) मनु** 6

समकालीन हिंदी साहित्य एवं किन्नर विमर्श - **डॉ.गायत्री.एन** 9

वृद्ध विमर्श के आइने में 'रेहन पर रग्घू' - **डॉ.माजिदा.एम** 11

'कचनार' उपन्यास एक परिचयात्मक दृष्टि - **डॉ.षीबा शरत.एस** 13

पद्मा शर्मा के उपन्यास लोकतंत्र के पहरुए में राजनैतिक परिदृश्य - **कृष्ण कुमार थापक** 15

कविता - ममता- **आतिरा.जे.एस** 19

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के दृष्टिकोण में सीता- **नीरजा. टी.के.** 20

निर्मल वर्मा की रचना में प्रवासी जीवन - **डॉ. षाजी.एन.** 24

भोजपुरी लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना **डॉ.शशिकला / डॉ.मनोज सिंह यादव** 27

नारी भी मानव है... साधन नहीं (कविता) - **डॉ.लता.डी** 30

साहित्य में किन्नर समाज का यथार्थ - **डॉ.षेनुजा मोल.एच.एन** 31

मैत्रेयी पुष्पा और रमणिका गुप्ता की आत्मकथा: एक तुलनात्मक अध्ययन - **अखिल. ए** 34

'अन्या से अनन्या' में प्रतिपादित नारी संघर्ष-**अश्विनी अजी** 36

देवनागरी लिपि वंदना (कविता) - **मोहन द्विवेदी** 39

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श: (दलित कहानियों के विशेष संदर्भ में) - **डॉ. धन्या.बी.** 40

समकालीन हिंदी कविता में बाज़ारवादी संस्कृति-**डॉ.अन्सा.ए** 42

दूनी गाँठ की गठरी - **मूल : के.एल. पॉल**
अनुवाद : प्रो.डी.तंकप्पन नायर व अधिवक्ता मधु.बी. 45

मुखचित्र : स्व. डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन

भोजपुरी लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना

डॉ.शशिकला & डॉ. मनोज सिंह यादव

लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी समान रूप से समाहित हैं। लोक ही राष्ट्र का अमर स्वरूप है और लोकगीत लोकमानस की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम। लोकगीतों में जीवन की मधुरता, उल्लास एवं संवेदना का अक्षय भंडार भरा हुआ है। इसमें जीवन के किसी एक पक्ष का नहीं बल्कि समस्त ज़गत की अनुभूति दिखाई देती है। लोकगीतों की सहजता एवं सरलता आमजन को प्रभावित किये बिना नहीं रह पाती।

ऋग्वेद सबसे प्राचीन साहित्य है, इनमें मिलने वाली गाथाओं में लोकगीतों की प्राचीनता के संकेत मिलते हैं। इन गाथाओं के अतिरिक्त भी लोकगीत मौखिक रूप से जनमानस में विद्यमान रहे होंगे। ऋग्वेद के साथ साथ ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों में भी लोकगीतों के संकेत मिलते हैं। गाथाएँ, साधारण जनमानस के मस्तिष्क की उपज है। जब मनुष्य द्वारा कोई बात भाव विह्वल होकर कही जाती है तब व्याकरण के नियम ढीले पड़ जाते हैं और वाक्य विन्यास भावों के अनुरूप हो जाता है। गाथाओं के संदर्भ में कृष्णदेव उपाध्याय लिखते हैं- ये गाथायें राजसूय यज्ञ के अवसर पर गायी जाती थीं, परन्तु विवाह के अवसर पर भी गाथा के गाने का विधान मैत्रायणी संहिता में दिया गया है।"[1]

हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र के अर्न्तगत भोजपुरी क्षेत्र भी आता है। हिन्दी भाषा के रचनाकारों द्वारा लिखे गये गीत भी भोजपुरी लोकगीत की धारा को आगे बढ़ाते हैं। भोजपुरी लोकगीतों का धरातल विस्तृत फलक पर विद्यमान था, वह केवल घरों तक ही सीमित नहीं थी अपितु सामाजिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना से संपन्न थी। भारतेन्दु हरिश्चंद्र भोजपुरी क्षेत्र वाराणसी के रहने वाले थे, उनकी रचना भारत-दुर्दशा में राष्ट्र के प्रति चिन्ता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है-

आवहु सब मिलिके रोवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई।।"[2]

स्वाधीनता संग्राम में आल्हा गाथा का प्रभाव असाधारण था, डॉ. विद्या सिन्हा लिखती हैं- आल्हा लोक की जीवनी शक्ति और उर्जा का महाकाव्य है, यद्यपि आल्हा की मूल गायकी बनाफरी बुन्देली में है, लेकिन बुन्देली में ही उसकी कई वर्णन शैलियाँ हैं। इतना ही नहीं बैसवाड़ी, कन्नौजी, अवधी इत्यादि लोक भाषाओं में भी अलग अलग वर्णन शैलियों की शृंखला है। इनकी विभिन्न शैलियों में हर जनपद की भाषाएं मुहावरे और मिजाज के साथ वहाँ की लोक संस्कृति और लोक चेतना इतनी घुलमिल गई है कि वह उस लोक की अपनी कथा बन गई है। यह परम्परा लोककवि जगनिक के आल्हा गायन से प्रारम्भ हुई थी।"[3] आल्हा उदल की वीरता और 52 युद्धों का ओजपूर्ण वर्णन लोककवि जगनिक ने इस प्रकार किया है- "बड़े लड़इया महोबा वाले,/जिनकी मार सही ना जाए।/एक के मारे दुई मरि जावैं,/तीसर खौ खाय मरि जाए।।"[4]

भारत की आजादी के लिए जो प्रयास किए गये उनमें भोजपुरी लोकगीतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख केन्द्र भोजपुरी क्षेत्र ही था, इसी क्षेत्र में चम्पारन आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, जलियाँवाला बाग हत्याकांड, संथाल विद्रोह इत्यादि घटनाएं घटित हुई। साधारण जनता अपनी भारत-माता को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर थी। फिरंगियों की दासता से सभी त्रस्त थे, स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े दासता से मुक्तिके स्वर अलाप रहे थे- भारत में जब जब क्रान्ति भइल।/भोजपुर मनई तब रखले लाज।।"[5]

1857 का स्वतन्त्रता संग्राम लोक का संग्राम था, क्योंकि उस दौरान लोक साहित्य में अंग्रेजी राज के विरुद्ध जनजागरण उत्पन्न करने वाले अनेक लोकगीत विद्यमान थे। लोकगीतों का साहित्य मौखिक माध्यम से प्रसारित होता था, इसलिए इसकी पहुँच जन जन तक थी। लोकगीत जनमानस को स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान

ISSN : 2320-7604
RNI NO. : DELHIN/2008/27588
Listed in UGC Care journal
October, 21, Part 1, Serial.No. 143

त्रैमासिक

बहुरि नहिं आवना

अंक-23
अप्रैल, 2023 - जून, 2023
मूल्य : 200 रुपए

आजीवक महासंघ ट्रस्ट द्वारा निर्गत

संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य

वर्ष : 15
अंक : 23
अंक : अप्रैल, 2023 - जून, 2023
संस्थाओं के लिए प्रति कापी : 100 रुपए
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10000 रुपए

संपादकीय पता
जे-5, यमुना अपार्टमेंट,
होली चौक, देवली,
नई दिल्ली-110080
मोबाइल : 09868701556
Email: bahurinahiawana14@gmail.com
Website-www.bahurinahiawana.in

Advertisement Rate
Full Page Rs. 20,000/-
Half Page Rs. 10,000/-
Qtr. Page Rs. 5,000/-
Back Cover Rs. 40,000/- (four colour)
Inside Front Rs.35,000/- (four colour)
Inside Back Rs. 35,000/- (four colour)

Mechanical Data
Overall Size 27.5 cms x 21.5 cms
Full Pages Print Area 24 cms x 18 cms
Half Page 12 cms x 18 cms or
24 cms x 9 cms
Qtr Page12 cms x 9 cms

प्रधान संपादक
प्रो. श्यौराज सिंह 'बेचैन'
संपादक
प्रो. दिनेश राम
सहायक संपादक
डा. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'
तान्या लाम्बा
भाषा सहयोग
डा. हेमंत कुमार 'हिमांशु'
डा. राजकुमार राजन
कानूनी सलाहकार
एड. सतपाल बिर्दी
एड. संदीप दहिया

संपादकीय सलाहकार एवं विषय विशेषज्ञ
डा. वी. पी. सिंह, प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर, बलवीर माधोपुरी, प्रो. फूलबदन, प्रो. नामदेव, प्रो. सुजीत कुमार, डा. चन्देश्वर, डा. दीनानाथ, डा. मोहन चावड़ा, विजय सौदायी, डा. यशवंत वीरोदय, डा. सुरेश कुमार, डा. मनोज दहिया

अप्रवासी समाज, संस्कृति और साहित्य के विशेषज्ञ
ओमप्रकाश वाघा, नरेन्द्र खेड़ा, राम बाबू गौतम, डा. गुलशन नजरोवना जुगुरोवा, डॉ. बयात रहमातोव, डा. सिराजुद्दीन नूरमातोव

- पत्रिका पूरी तरह अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
- पत्रिका से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
- 'बहुरि नहिं आवना' के सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'बहुरि नहिं आवना' के नाम से स्वीकृत किये जायेंगे।
- स्वामी, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रो. दिनेश राम की ओर से भारत ग्राफिक्स, सी-83, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-20 द्वारा मुद्रित एवं एफ-345, लाडो सराय, नई दिल्ली- 30 से प्रकाशित।
- 'बहुरि नहिं आवना' में प्रकाशित लेखों में आये विचार लेखकों के अपने हैं जिन से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

अनुक्रम

संपादकीय	*–दिनेश राम*	
1. चाण्डालत्व से ब्राह्मणत्व तक : पूर्व-मध्यकालीन भारत में अछूतों के अंदर सामाजिक गत्यात्मकता	*–प्रो. विजया लक्ष्मी सिंह* *–डॉ. प्रेम कुमार*	1
2. हिन्दू कोड बिल	*–डॉ. संजीव कुमार गौतम*	5
3. भीमगीत : भोजपुरी लोक में बहुजन अस्मिता का हस्तक्षेप	*–धनंजय सिंह*	15
4. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में चित्रित पहाड़ी जीवन ('बस एक ही इच्छा' कहानी संग्रह के सन्दर्भ में)	*–डॉ. पठान रहीम खान*	21
5. तुलसी के मानस काव्य में लोक दृष्टि	*–डॉ. श्रवण कुमार*	25
6. हैदराबाद का आदि हिन्दू आंदोलन और स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' (1906-1931)	*–अभिलाष वेन्ना*	29
7. मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में दलित प्रश्न	*–डॉ. राजेंद्र घोडे*	32
8. वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में लोकसंस्कृति	*–डॉ. शशिकला*	35
9. निराला का काव्य और भारतीय संस्कृति	*–प्रज्ञा मिश्रा*	37
10. पद्मा शर्मा की कहानियों में नारी पात्रों की मनःस्थिति का विश्लेषण	*–कृष्ण कुमार थापक* *–डॉ संगीता पाठक*	41 45
11. भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के मध्य सांस्कृतिक संश्लेषण फैलाने में महान सम्राट अशोक का योगदान	*–ललित सिंह*	49
12. दलित जीवन-संघर्ष और मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास	*–विद्यार्थी कुमार (शोधार्थी)*	53
13. 'बेघर' उपन्यास : प्रेम एवं पुरुष अहं का संघर्ष	*–श्रीमती मेनुका श्रीवास्तव*	56
14. दलित स्त्री मुक्ति का स्वकथन : अपनी जमीं अपना आसमां	*–कुसुम सबलानिया*	59
15. फिल्म 'कशमकश' और रवींद्रनाथ टैगोर कृत उपन्यास 'नाव दुर्घटना' का तुलनात्मक अध्ययन	*–श्रेयसी सिंह*	63
16. 'सूरजमुखी अँधेरे के' में अभिव्यक्त स्त्री मन की पीड़ा	*–सुमन साहू*	66
17. विमर्शों से आगे : एक रास्ता यह भी	*–डॉ. राजेश कुमार*	69
18. 'उत्कोच' दलित मानवीय संवेदना का सच	*–उषा यादव*	74
19. वर्तमान परिदृश्य में प्राचीन सामाजिक-राजनीतिक चिन्तन की प्रासंगिकता	*–अरुण कुमार*	77
20. महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज व्यवस्था : एक अवलोकन	*–डा. ज्योति सिंह गौतम*	81
21. पितृसत्ता का उद्भव और हिन्दी उपन्यास : विशेष संदर्भ जैनेन्द्र का सुनीता	*–डा. रजनी दिसोदिया*	85
22. जापानी इतिहास एवं समाज : एक विश्लेषण	*–डॉ सूरज प्रकाश बडत्या*	90
23. ब्रिटिश शासन एवं क्रान्तिकारी संघर्ष में कानपुर की भूमिका	*–अभिषेक सचान* *–डॉ. आर. के. बिजेता*	95

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में लोकसंस्कृति

–डॉ. शशिकला

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसके महत्व को इसी से समझा जा सकता है कि हजारों वर्षों बाद आज भी यह संस्कृति जीवित है। संस्कृति की बात की जाये तो संस्कृति और समाज का गहरा संबंध है, क्योंकि व्यक्तियों से समाज बनता है और समाज में संस्कार एवं नियम बने होते हैं। आधुनिकता के इस दौर में व्यक्ति जहाँ कुण्ठा, निराशा और तनाव का शिकार हो रहा है, ऐसे समय में परिवार ही एकमात्र ऐसी है शक्ति है जो भावनात्मक एवं नैतिक संबल प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति मनुष्य की छिपी हुई आन्तरिक दिव्यता को प्रकाशित करने का सामूहिक प्रयत्न है। इसकी पहचान देश के विविध धर्म, वर्ग, जाति, परम्परा, रहन-सहन, खान-पान, पहनावा, व्यवहार इत्यादि में दिखता है। रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं–"संस्कृति मानव जीवन में उसी प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता युग-युगान्तर से संस्कृति निर्मित होती है। संस्कृति किसी भी राष्ट्र की उत्कृष्टतम् निधि होती है। राष्ट्र-विशेष का जीवन-स्मरण, उसकी उन्नति-अवनति, प्रतिष्ठा आदि तथ्य उसकी संस्कृति पर आधारित रहते हैं। जिस राष्ट्र की संस्कृति जितनी उदात्त होती है, वह राष्ट्र उतना ही गौरवशाली बनता है।"[1]

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति भारत एवं विश्व के अनेक लोक संस्कृतियों से भी प्राचीन है। लोक संस्कृति उतनी ही पुरानी है, जितना मनुष्य जीवन। इसलिए उसमें जनजीवन की प्रत्येक अवस्था, वर्ग, समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित रहता है। इसमें समरसता का भाव जुड़ा होता है जो लोगों को समता और सहिष्णुता प्रदान करती है। लोक संस्कृति की कलात्मक विशेषताओं एवं रूचियों को लोक कला और जन संस्कृति उजागर करती है। बुन्देलखण्ड में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्र आंशिक रूप से समाहित हैं। इसके अलग-अलग भागों में भाषा, संस्कृति एवं इतिहास में विविधता होते हुए भी यह बुन्देलखण्ड की भूमि आल्हा-ऊदल और छत्रसाल जैसे महान शख्सियत से भरी पड़ी है। चूँकि, साहित्य समाज का दर्पण होता है, वह किसी भी व्यक्ति, स्थान, संस्कृति एवं भाषा का समग्र परिचय कराता है। वर्मा जी के साहित्य में बुन्देलखण्ड के पहाड़ियों, धामोनी के जंगल, बरुआ सागर की झील, बीहड़, टौरियों तथा बेतवा और धसान जैसी नदियों का उल्लेख मिलता है, साथ ही बुन्देलखण्ड की विभिन्न वनस्पतियों जैसे करधई, कठवर, तेंदु, अचार साज,

महुआ, करौंदे आदि का वर्णन उनके उपन्यासों में किया गया है।

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति एवं लोक कला की ऐतिहासिकता का चित्रण वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में सफलता से मिलता है। इनके अधिकतर उपन्यास ऐतिहासिक दृष्टि से परिपूर्ण थे। ऐतिहासिक मूल्यों से प्रभावित परिवार में जन्म लेने के कारण उनके उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के मध्यकालीन ऐतिहासिक शौर्य एवं वैभव को सजग वर्णित है। वर्मा जी ने झाँसी की रानी उपन्यास में झाँसी के किले के साथ-साथ करकबेहट, ओरछा और बरुआ सामन्त प्रभावी राज्यों एवं उनके किले का सौन्दर्य वर्णन किया है तो वहीं कचनार उपन्यास में धामौनी के किले के विशाल रूप को चित्रित किया है। धामौनी के विषय में वर्मा जी लिखते हैं—"धामौनी एक उजाड़ बीहड़ है, परन्तु इतिहास और परम्परा का एक चमत्कार उसे घेरे हुए है।"[2] वृन्दावनलाल वर्मा ने बुन्देली भाषा में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को अपने ऐतिहासिक पात्रों के मुख से जीवन्त कर दिया है। बुंदेलखंड और उससे जुड़े इतिहास उनके अधिकांश उपन्यासों में यथानुसार अभिव्यक्त हुआ है। इन्होंने अपने अधिकांश उपन्यासों में बुन्देली लोकजीवन और बुन्देली लोक संस्कृति को उसके ऐतिहासिक प्रसंगों के अनुकूल भाव अभिव्यक्त किया है। उनके अधिकांश पात्र बुन्देली भाषा एवं संस्कृति में रचे बसे हैं।

वर्मा जी के लगभग सभी उपन्यासों में प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण है। यहाँ की झीलें और प्राकृतिक वातावरण दर्शकों को आकर्षित और मंत्रमुग्ध कर लेता है। जिस प्रकार सुमित्रानंदन पन्त प्रकृति के सुरम्य वातावरण में बैठकर प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को निहारा करते थे, उसी प्रकार वर्मा जी भी प्रकृति के प्रति गहरी आत्मीयता रखते थे। भुवन विक्रम उपन्यास में वे लिखते हैं—"अस्ताचलगामी सूर्य की कोमल किरणों पर आश्रमों के हवन के धुआं का पुंज ओढ़नी-सी उढ़ा रहा था। वृक्षों की लम्बी छाया हरी सुनहरी दूब पर मंथर पवन के झोंकों के साथ मन्द-मन्द खिसक रही थी। कहीं-कहीं से आने वाला ऋचाओं का गान चिड़ियों की चहक के साथ गुंथकर उस छाया को स्फूर्ति सी दे रहा था।"[3] लोक गीत लोक संस्कृति का दर्पण है और मानव हृदय की अभिव्यक्ति भी है। संगीत वर्मा जी के जीवन का अभिन्न अंग रहा है। संगीत के प्रति प्रेम को अपनी आत्मकथा अपनी कहानी में वे लिखते हैं—"मुझे गाने व बजाने का शौक रहा है। अकस्मात् उस्ताद आदिल खां से भेंट हो जाती है जिससे उनको संगीत के प्रति इच्छा को और भी बल मिला। दैनिक कार्यक्रम में संगीत भी एक अनिवार्य अंग था। संध्या के समय घूमने टहलने के बाद संगीत की बैठक होती थी जो रात के बारह बजे तक चलती थी।"[4] लोकगीत तो बुंदेलखंड की आत्मा है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत तक के संस्कारों में लोकगीतों की संगीतमय धुन मंत्रमुग्ध करती है। मृगनयनी उपन्यास में इनके संगीत प्रेम का सर्वोच्च रूप दिखाई देता है। उनके वास्तविक जीवन का साथी उस्ताद आदिल खां ही मृगनयनी का बैजूबावरा है।"[5] बसन्त ऋतु में बुंदेलखंड की प्रकृति अपने रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियों एवं अनुपम छटा से सभी का मन आकर्षित करती है। होली के अवसर पर जाति-पाँति एवं भेद-भाव से रहित होकर सभी एक दूसरे पर रंगों की बौछार करते हैं और दोपहर बाद मंदिर में एकत्रित होकर स्त्री-पुरुष मिलकर यह गीत गाते हैं—"जाग परी मैं पिय के जगाये, भाग जगे पिय मोरे घर आये/ जा नैनन में नींद करी है, जिन नैनन में आप समाये।"[6] साथ ही मन्दिर का पुजारी भी पूजा के पश्चात् प्रसाद के साथ ही लाल रंग से सबके ऊपर छींटे मारता है और एक लोकगीत गाता है— *'उरझी न श्याम कही मानों/ फट गई चुनरिया जिन जानो/ कंस राजा को राज जुरो है/ गोकुल की गुजरिया मत जानो/ उरझी न श्याम कही मानों।'*[7]

बुन्देली संस्कृति में विभिन्न पर्व, उत्सव एवं ऋतुओं के आगमन का संकेत जनता लोक गीतों से करती है। विराटा की पद्मिनी उपन्यास में दुर्गा कही जाने वाली कुमुद को नरपति प्रणाम करता है और अपना अपराध स्वीकार करते हुए देवी स्वरूप कुमुद से वरदान की कामना करते हुए यह गीत गाता है—"*मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के/ बीन-बीन फुलवा लगाई बड़ी रास/ उड़ गये फुलवा रह गई बास/ मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के।*"[8] लोक, जीवन का साक्षात् दर्पण होता है और लोकगीत मानव मन की अभिव्यक्ति का माध्यम। किसी भी समाज की स्थिति, नारी का स्थान, लोक की संस्कृति का माध्यम लोकगीत ही होता है। वर्मा जी के उपन्यास 'झाँसी की रानी', 'कचनार', 'रामगढ़ की रानी' इत्यादि उपन्यासों में भी लोकगीतों का प्रयोग प्रमुखता से हुआ है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, सूदखोरी, शोषण, अत्याचार और महाजनों के चंगुल में फंसा समाज लोकगीतों के माध्यम से गढ़कुंडार उपन्यास में अपनी व्यथा-कथा कहता है—"*भैया ऐसे! झकें झरे/ गुनिया बैद्य सबई जुरि आये/ ओखद बूटी सबरे घाले/ रुपया लेयं सगुन को/ पीछे नबज निहारें/ देवे रुपया लिखें सवाय दूने।*"[9]

भारतीय समाज और संस्कृति में अनेक अनुष्ठान एवं रीति-रिवाज घुले-मिले हैं, जिनका निर्वाह जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत तक अनेक संस्कारों के माध्यम से दैनिक जीवन में किया जाता है। ये संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। इसलिए जनमानस इसकी अवहेलना नहीं कर पाता है, क्योंकि इससे उनकी आस्था एवं भावनाएं जुड़ी रहती हैं। चूँकि, बुन्देली संस्कृति एवं रीति-रिवाज भारतीय सिद्धांतों पर आधारित हैं, इसलिए वर्मा जी भी अपने उपन्यासों में इनकी अवहेलना नहीं कर पाए हैं। बुन्देली जनता जीवन में उल्लास के लिए अनेक पर्व एवं उत्सवों का आयोजन करता है और इन उत्सवों के अवसर पर रीति-रिवाज एवं परम्पराओं का पालन भी किया जाता है। कचनार उपन्यास में अक्षय तृतीया का पर्व इस प्रकार मनाया जाता है—"अक्षय तृतीया के आने पर समृद्ध पुरुषों के यहाँ दाल, चावल, दही, पकौड़े, कढ़ी और सपूदी रोटी बनाई जाति है, जबकि गरीब के यहाँ केवल चावल ही बनाया जाता है। देवी-देवताओं की पूजा की जाति है, महिदारों और नौकरों को हल्दी के टीके लगाकर खिलाया-पिलाया जाता है। खेत में हल से एक कूंड़ डाला गया। तीसरे पहर उपरान्त, जब थोड़ी-थोड़ी लू चल रही थी स्त्रियाँ चने के भीगे हुए दाना और बताशे लेकर निकल पड़ीं। एक दूसरे को गाते-गाते बांटे। लड़कियों और लड़कों ने आक के अधखिले फल तोड़े और जिनका परस्पर नाता भाई बहिन का या इससे मिलता जुलता न था, एक दूसरे पर फेंके।"[10]

बुंदेलखंड में विवाह के समय अनेक परम्पराओं का निर्वाह किया जाता है। राजगोड़ों में विवाह के समय मछली बेधने की प्रथा है, जिसका निर्वाह वर पक्ष एवं वधू पक्ष दोनों के यहाँ होता है—"धातु की कुण्डी में पानी भरा गया, उसमें आटे की मछली बनाकर डाली गई। छोटे से तीर-कमान दलीपसिंह और उसकी दुलहिन के हाथ में दिए गए। मछली एक डोर से बंधी थी। डोर एक स्त्री के हाथ में थी। वह आटे की मछली इधर-उधर घुमा रही थी। वर-वधू बेधने के लिए अपने छोटे-छोटे तीर छोड़ने लगे। यह नेग लड़की वाले के घर पर भी किया गया था। बारात लौटने पर यहाँ भी किया गया।"[11] इसके साथ ही बुंदेलखंड में वैवाहिक रीति में टीके की प्रथा का भी निर्वाह किया जाता है, इसमें जब तक वर का पिता कन्या पक्ष के यहाँ भोजन नहीं कर लेता तब तक इस रस्म को पूरा नहीं माना जाता है। नव वधू का ससुराल पहुँचने पर नाम परिवर्तित करने की भी प्रथा है इसलिए मनु को लक्ष्मीबाई और निन्नी को मृगनयनी नाम दिया गया।

बसन्त ऋतु का पर्व बुंदेलखंड में अत्यंत उत्साह के साथ मनाया जाता है। चैत्र नवरात्रि में गौर की प्रतिमा स्थापित की जाती है, प्रतिमा को फूलों और आभूषणों से विभूषित कर दिया जाता है। यह उत्सव हल्दी-दूब के नाम से जाना जाता है। यह पर्व का सौन्दर्य है। यह पर्व स्त्रियों का होता है जिसमें प्रत्येक वर्ग की स्त्री भाग लेती है, रानियाँ भी इसमें अत्यंत उत्साह से अपने प्रजा और दासियों के साथ इस उत्सव में सहभागिता करती है—"हल्दी-दूब के उत्सव पर बहुत सी स्त्रियाँ एक-दूसरे को रोरी का टीका लगाती हैं और उनको किसी न किसी बहाने अपने पति का नाम लेना पड़ता है।"[12] इनके उपन्यासों में होली का पर्व भी अत्यंत उत्साह एवं धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। होली का उत्सव रंगपंचमी यानि पांच दिन तक मनाई जाति है—"दौड़ते भागते हुए गाँव की सब बहुएं [illegible] से आग्रह करते हुए एक दूसरे पर पिचकारियाँ, गोबर और कीचड़ डालती हैं। नाचने में टेका लगाने वाले पुरुषों को कीचड़ से सराबोर करने पर ही शान्त होती हैं, जिसकी गांठ में पैसा नहीं होता वे होली को रंग के स्थान पर कीचड़ और गंदे पानी से मनाते हैं। भाई-बहन के बीच यह रिवाज नहीं होता।"[13]

वर्मा जी के उपन्यासों में रीति-रिवाज एवं परम्पराओं का निर्वाह अनेक उपन्यासों में हुआ है। नव गृह प्रवेश का रिवाज बुंदेलखंड में आधुनिक रीति-नीति के साथ किया जाता था। गूजरी महल का निर्माण राजा मानसिंह ने अपनी प्रिय रानी मृगनयनी के प्रेम के प्रतीक के रूप में करवाया था, जिसे आज ग्वालियर का सबसे पुराना संग्रहालय भी माना जाता है। गूजरी महल एवं मान-मंदिर के निर्माण के पश्चात् उसमें "गृह प्रवेश के लिए होली के उत्सव की रंग-पंचमी का मुहूर्त रक्खा गया। होली के उत्सव में जनता वैसे ही मस्त थी, रंग-पंचमी के दिन तो मस्ती में डूबने-उतराने लगी। मान-मन्दिर और गूजरी महल के साथ जनता के मन का अपनापन स्थापित था। सैनिकों ने केसरिया साके बांधे, नगर की अन्य स्त्रियाँ रंग-बिरंगेपन में फूट पड़ीं, प्रसिद्ध गायक बैजू भी वीणा वादन कर सरस्वती की वंदना की।"[14]

हमारी भारतीय संस्कृति में कुओं का विशेष महत्व रहा है और स्वाधीनता संग्राम में आल्हा गाथा का प्रभाव अमूल्यवान था। डॉ. विद्या सिन्हा लिखती हैं—"आल्हा लोक की जीवनी शक्ति और ऊर्जा का महाकाव्य है, यद्यपि आल्हा की मूल गायकी बनाफरी बुन्देली में है, लेकिन बुन्देली में ही उसकी कई वर्णन शैलियां हैं। इतना ही नहीं बैसवाड़ी, कन्नौजी, अवधी इत्यादि लोक भाषाओं में भी अलग अलग वर्णन शैलियों की शृंखला है। इनकी विभिन्न शैलियों में हर जनपद की भाषाएं मुहावरे और मिजाज के साथ यहाँ की

लोक संस्कृति और लोक चेतना में इतनी घुलमिल गई है कि वह उस लोक की अपनी कथा बन गई है। यह परम्परा लोककवि जगनिक के आल्हा गायन से प्रारम्भ हुई थी।"[15] आल्हा की जीवनी शक्ति कहीं न कहीं वर्मा जी को भी प्रेरित करती है, उन्होंने युद्धों का सजीव चित्रण अपने कई उपन्यासों में प्रमुखता से किया है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई सभी महिलाओं की आदर्श हैं। उनकी वीरता का वर्णन वर्मा जी ने झाँसी की रानी उपन्यास में इस प्रकार किया है–"रानी ने घोड़े की लगाम अपने दाँतों में दाबी और दोनों हाथों से तलवार चलाकर अपना मार्ग बनाना आरम्भ कर दिया और दुहत्थे तलवार से आगे का मार्ग साफ करती चली जा रही थी। अंततः युद्ध करते-करते रानी हर हर महादेव का उद्घोष करते हुए वीर गति को प्राप्त होती हैं।"[16]

निष्कर्षतः हम देख सकते हैं कि बुंदेलखंड के जीवन एवं संस्कृति का प्रामाणिक अध्ययन वर्मा जी के उपन्यासों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उपन्यास साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से किसी भी क्षेत्र के भाषा, साहित्य एवं लोक संस्कृति का परिचय समग्रता से मिलता है। इनके उपन्यासों में विवाह, पर्व, लोकगीत, लोकरीति, संस्कृति, लोकभाषा, युद्ध और पात्रानुकुल भाषा का निर्वाह गहराई से हुआ है। साथ ही उस क्षेत्र के जनजीवन, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक संरचना की विशिष्टता का भी ज्ञान होता है।

संदर्भ सूत्र

1. भारतीय संस्कृति का उत्थान, डॉ. रामजी उपाध्याय, रामनारायण लाल प्रकाशक, इलाहाबाद, पृ.7
2. अपनी कहानी, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 7, पृ. 825
3. भुवन विक्रम, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी भाग 5, पृ. 130
4. अपनी कहानी, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 7,पृ. 747
5. वही, पृ. 739
6. मृगनयनी, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 3, पृ. 561
7. वही, पृ. 567
8. विराटा की पद्मिनी, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 1, पृ. 806
9. गढ़कुंडार, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 1, पृ. 76
10. कचनार, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 3, पृ. 51
11. वही, पृ. 6
12. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 2, पृ. 161
13. मृगनयनी, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 3 पृ. 566
14. वही, पृ. 765
15. विद्या सिन्हा, भारतीय साहित्य परंपरा और परिदृश्य, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, पृ. 82
16. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, सं. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लि., पिशाच मोचन, वाराणसी, भाग 2, पृ. 347

–डॉ. शशिकला
एसो. प्रो., हिन्दी विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय,
कमच्छा, वाराणसी
Email: shashi.bhu10@gmail.com
Mob. Number. 7376558390

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

62

ISSN 0975-735X

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 62/4 अप्रैल-जून 2023 400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम
डॉ० प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
09557746346
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

अनुक्रम

गढ़वाल हिमालय के लोकनृत्य/ **डॉ॰ डी॰एस॰ भंडारी** 20

हिंदी साहित्य में इलाहाबाद का योगदान और बालकृष्ण भट/ **अरुण रंजन** 24

डॉ॰ शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में भाषा-सौंदर्य/
चारू रानी, डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद सिंह 28

नागरी प्रचारिणी सभा और शोधपरक पत्रकारिता का आरंभ/
कुलदीप कुमार पुष्पाकर 35

लोककवि पं॰ हरिपाल गौड़ के साहित्य में रस से परिपूर्ण वाणी/ **अनीता देवी** 39

निराला काव्य में दलित चेतना/ **डॉ॰ मिन्तु, नीरज कुमार** 46

अनुवाद विमर्श और मानव विकास/ **डॉ॰ एस॰ प्रीति** 51

स्त्री-विमर्श: उपलब्धि एवं सीमाएँ/ **नीरज कुमार, डॉ॰ मिन्तु** 56

केरल में हिंदी का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक एवं राजनीतिक
परिप्रेक्ष्य में प्रसार/ **डॉ॰ पुरुषोत्तम कुंदे, डॉ॰ अरविंद कुमार रावत** 61

अज्ञेय की भारत विभाजन-संबंधी कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना/
डॉ॰ राजा राम 68

'ढलती साँझ का सूरज' उपन्यास में किसान विमर्श/ **डॉ॰ ऋतु** 75

कथाकार दामोदर मावजो कृत 'कार्मेलीन' उपन्यास : विभिन्न पहलू/
डॉ॰ रूपा चारी 80

साहित्य लेखन की विषयवस्तु एवं साहित्य सेविका के रूप में
महिलाओं का योगदान/ **डॉ॰ संध्या पुजारी** 84

पुरुष सत्ता एवं स्त्री प्रतिरोध की कसौटी : माधवी नाटक/ **डॉ॰ शशिकला** 90

नाला सोपारा में चित्रित किन्नर का संघर्ष/ **सुनीता चौहान, डॉ॰ बी॰ कामकोटी** 94

उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए
(देश के विकास में युवाओं का महत्त्व)/ **डॉ॰ राजल गुप्ता** 97

शंकर शैलेंद्र की कविताओं में सामाजिक विषमता का स्वरूप/
लक्ष्मण कुमार पंकज 102

समकालीन हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चेतना/
डॉ॰ शाहिद हुसैन, डॉ॰ श्रद्धा हिरकने 107

दलित साहित्य और उसका सौंदर्यशास्त्र : एक विवेचन/ **डॉ॰ अमित कुमार** 111

परवीन शाकिर का रचना संसार : नारी मन का विस्तार/ **डॉ॰ शैव्या त्रिपाठी** 115

छायावादी कवियों की राष्ट्रीय चेतना/ **डॉ॰ नागेंद्र कुमार शर्मा** 122

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव/
डॉ॰ मौसम पारीक, दीपशिखा शर्मा 129

पुरुष सत्ता एवं स्त्री प्रतिरोध की कसौटी: माधवी नाटक

डॉ॰ शशिकला, एसो॰ प्रोफेसर, हिंदी विभाग
वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी भीष्म साहनी हिंदी गद्यकारों में सर्वश्रेष्ठ रचनाकार हैं। वे मूलत: कथाकार हैं किंतु उनके नाटकीय व्यक्तित्व के संदर्भ में जयदेव तनेजा लिखते हैं, 'स्वाभाविक-यथार्थपूर्ण चरित्रों की जीवंत सृष्टि, क्षणों की सूक्ष्म पकड़, सहज नाटकीय प्रसंगों की अद्भुत समझ, गहन विडंबनापूर्ण स्थितियों की अचूक पहचान, रोचक एवं कुतूहलपूर्ण घटनाक्रम की कुशल योजना और तनावपूर्ण मन:स्थितियों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की तार्किक शक्ति जैसी नाट्य लेखन के लिए सभी प्रमुख विशेषताएँ भीष्म साहनी के कथासाहित्य में आरंभ से ही विद्यमान थीं।'[1] भीष्म साहनी के लेखन में विविधता को इस तथ्य के आलोक में और अधिक गहराई से समझा जा सकता है कि उनके लेखन की प्रमुख विधाओं–कहानी, उपन्यास और नाटक तीनों में उनके तेवर एकदम अलग हैं। कहानी में जहाँ वे सामाजिक-पारिवारिक मूल्यों को महत्त्व देते हैं वहीं उनके उपन्यास विभाजन की त्रासदी के जीवंत दस्तावेज हैं। ज्योतिष जोशी का कहना है, 'नाटककार भीष्म साहनी कथा और उपन्यास से एकदम अलग हैं। इस क्षेत्र में वह बिल्कुल नये चेतना और सोच की बात करते हैं।'[2]

भीष्म साहनी ने कुल छह नाटकों की रचना की। हानूश (1977), कविरा खड़ा बाजार में (1981), माधवी (1984), मुआवजे (1993), रंग दे बसंती चोला (1996), आलमगीर (1999)। इन्होंने अपने एक साक्षात्कार में एक सवाल के जवाब में नाटक-संबंधी अपनी रुचि के विषय में कहा है कि 'नाटक की दुनिया बड़ी आकर्षक और निराली है। किस तरह धीरे-धीरे नाटक रूप लेता है और रूप लेने पर कैसे एक नए संसार की सृष्टि हो जाती है। यह अनुभव बहुत ही सुखद और रोमांचकारी होता है। नाटक खेलनेवालों के सिर पर एक तरह का जुनून छाया रहता है, जिसका मुकाबला नहीं।'[3] नाटक और रंगमंच के प्रति अपने रुझान का उल्लेख भीष्म जी ने अपनी आत्मकथा में कई स्थानों पर किया है। बचपन से ही वे नाटकों में अभिनय करते थे। वे स्वयं लिखते हैं, 'मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था जब स्कूल में खेले गए एक नाटक में पहली अदाकारी की। नाटक का नाम 'श्रवण कुमार' था और मैं श्रवण कुमार की भूमिका ही निभा रहा था।'[4] बचपन से नाटक में रुचि होते हुए भी प्रारंभिक दौर में वह कहानियाँ ही लिखते रहे–'रंगमंच के मायावी आकर्षण से बिंधे भीष्म साहनी एक अभिनेता, निर्देशक, व्यवस्थापक, अनुवादक, रूपांतरकार, दर्शक और थिएटर एक्टिविस्ट के नाते रंगमंच से कमोबेश हमेशा ही जुड़े रहे। इसके बावजूद यह भी सच है कि 1976 में अपना पहला मौलिक नाटक हानूश लिखने से पहले तक उनके रचनात्मक लेखन का केंद्र कहानी-उपन्यास ही रहा और उस क्षेत्र में उन्होंने खूब ख्याति, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता भी अर्जित की। परंतु जब नाट्य-लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हुए तो हानूश को लेकर बड़े भाई की प्रतिक्रिया और सुप्रसिद्ध नाट्य-निर्देशक इब्राहिम अलकाजी की उपेक्षा भी उन्हें हतोत्साहित नहीं कर सकी।'[5]

ISSN 0975-735X

भीष्म साहनी द्वारा लिखित नाटक माधवी, जिसे पहली बार 1982 में प्रदर्शित किया गया था और बाद में 1984 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। नाटक वास्तव में महाभारत के एक सूक्ष्म कथा पर केंद्रित है और इसकी कथा माधवी और गालव के इर्द-गिर्द चलती है। महाभारत में वर्णित कथा के अनुसार, माधवी नहुष कुल के चंद्रवंशी राजा ययाति की पुत्री थी, पौराणिक कथा पर आधारित होते हुए भी यह एक फेमिनिस्ट नाटक है। बेहद नाटकीय और संभावनाओं से भरे इस कथानक में न सिर्फ स्त्री के शोषण और समाज में उसके दोयम दर्जे के लिए उत्तरदाई कारणों को समझा जा सकता है बल्कि यह देह व ताकत की राजनीति को भी उघाड़कर रख देता है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को केवल देह मात्र समझा जाता है और पुरुष उसको अपनी निजी संपत्ति समझकर मनमाना शोषण करता रहा है। स्त्रियों के प्रति होने वाले अन्याय ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया।

दानवीर ययाति ने अपनी पुत्री माधवी को मुनि गालव को सिर्फ इसलिए सौंप दिया, ताकि वह माधवी को बाकी राजाओं को देकर उसके बदले में 800 अश्वमेधी यानी सफेद घोड़े प्राप्त कर सके। सुनने में भले अजीब लगे, पर कहानी यूँ है कि गालव, ऋषि विश्वामित्र के बड़े प्रिय शिष्य थे। अपनी दीक्षा पूरी करने के बाद गुरु विश्वामित्र को गुरु-दक्षिणा देना चाहते थे। ऋषि विश्वामित्र ने गालव को कई बार मना किया। कहा–तुम 12 कलाओं में निपुण हुए हो, यही मेरी गुरु दक्षिणा है। लेकिन, गालव जिद पर अड़े रहे। तब गालव के हठ से नाराज ऋषि विश्वामित्र ने उसे 800 अश्वमेधी घोड़े दक्षिणा में देने को कहा। जिसका निमित्त माधवी बनती है और ययाति अपनी झूठी एवं खोखली दानवीरता तथा प्रतिष्ठा को कायम रखने के साधन के रूप में जब माधवी को गुरु दक्षिणा चुकाने के लिए गालव को सौंप देते हैं तो वह अपने पिता से प्रश्न करती है–'आज माँ होती तो क्या वे भी मुझे इस तरह दान में दे देतीं।'[6] एक स्त्री जिसे प्रकृति ने उपहार स्वरूप प्रेम, मातृत्व एवं त्याग जैसी गुणों से सुशोभित किया है, किंतु माधवी प्रकृति के इस उपहार से सुशोभित होने के पश्चात् भी मातृत्व सुख से वंचित रह जाती है। जब गालव कहता है कि तुम स्वतंत्र हो तब अपने हृदय की पीड़ा व्यक्त करते हुए वह कहती है–'स्वतंत्र? कैसी स्वतंत्रता गालव? उन दीवारों के पीछे मेरा नन्हा बालक मुँह खोले मेरा स्तन ढूँढ रहा है, और तुम कहते हो मैं स्वतंत्र हूँ।'[7] माधवी अपने कर्त्तव्य निर्वाह के लिए अपने नवागत शिशु को भी छोड़कर चली आती है, जबकि प्रथम बार राजा हर्यश्व के दरबार में जाने पर उसे कई अग्नि परीक्षा देनी होती हैं, क्योंकि माधवी को यह वरदान प्राप्त था कि उसके गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र चक्रवर्ती राजा बनेगा। हमारी भारतीय संस्कृति के विरुद्ध माधवी को स्त्री नहीं एक वस्तु समझा जाता है और उसके प्रत्येक अंग प्रत्यंग की जाँच की जाती है–'राजज्योतिषी पीठिका के इर्द-गिर्द घूमता हुआ माधवी को ऊपर से नीचे तक देखता है, फिर एक-एक अंग का निरीक्षण करने लगता है।'[8]

भीष्म साहनी ने इस नाटक के माध्यम से स्त्री स्वातंत्र्य पर प्रश्नचिह्न लगाया है। पौराणिक कथा के माध्यम से उन्होंने प्राचीनता में नवीनता का समावेश किया है। माधवी नाटक की मूल कथा महाभारत के उद्योग पर्व से लिया गया है किंतु महाभारत की वह कर्त्तव्यपरायण और सेवाभाव रखने वाली स्त्री जिसके अंदर कभी प्रतिरोध का भाव नहीं था, जो केवल समर्पण करना जानती थी, उसमें भीष्म साहनी ने अपने नाटक के माध्यम से प्रतिरोध का भाव जाग्रत किया है। वह गालव से कहती है–'यह क्या हो रहा है, गालव? तुम मुझे कहाँ ले आए हो? मेरे साथ किस जन्म का बैर चुकाने आए हो?'[9] यहीं से माधवी का प्रतिरोध प्रारंभ होता है। इस नाटक में गालव और ययाति

ISSN 0975-735X

सामंती सोच के प्रतिनिधि पात्र के रूप में सामने आए हैं। तभी तो ययाति, माधवी को दानस्वरूप गालव को देते हुए कहते हैं–'राज ज्योतिषियों ने माधवी के लक्षणों की जाँच की है। इसके गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक चक्रवर्ती राजा बनेगा। सुना मुनिकुमार? ऐसे लक्षणोंवाली युवती को पत्नी कोई भी राजा तुम्हें घोड़े दे देगा। माधवी को पाकर वह धन्य होगा। तुम निःसंकोच इसे ले जाओ।'[10] एक पिता के मुख स्वयं अपनी पुत्री के लिए ऐसी बातें कहना शोभा नहीं देता, निश्चित रूप से दानवीरता में प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए ययाति अपनी पुत्री को वस्तु समझकर दान कर देते हैं।

माधवी पुरुषप्रधान समाज में एक भारतीय एवं परंपरागत नारी के रूप में आजीवन घुट-घुट पीड़ा संत्रास को सहते हुए निरंतर त्याग करने वाली समर्पित नारी के रूप में हमारे सामने आती है। इस पूरे नाटक में पुरुष सत्ता हावी है। ययाति और गालव के साथ-साथ जिन राजाओं के रनिवास में माधवी रही, वहाँ की स्त्रियों की दयनीय दशा को देखकर वह कराह उठती है और गालव से कहती है–'जानते हो, जिन रानियों से राजा को संतान नहीं मिली, महल की दीवारों के पीछे उनकी क्या गति हुई? उन्हें भोजन तक के लिए कोई नहीं पूछता था। मेरे महल में आ जाने के बाद भी राजा ने दो ब्याह और किए हैं।'[11] अर्थात् उन रानियों की स्थिति दासियों से भी बदतर थी, समाज में आज भी पुत्र की कामना ही की जाती है, पुत्री उसके लिए बोझ होती है क्योंकि हमारा भारतीय समाज पुत्र को ही वारिश मानता है, यही कारण है कि वारिश या पुत्र न दे पाने के कारण रानियाँ रनिवासों में कैदी का जीवन जीने के लिए विवश होती थीं।

भारतीय समाज में स्त्री को स्वतंत्र नहीं माना गया। वह पुत्री, बहन, पत्नी और माँ के रूप में पुरुष के अधीन है। दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' जब बुद्ध के शरण में जाना चाहती है तो उसे यह कहकर रोक दिया जाता है कि क्या उसने पुरुष रूपी अभिभावक से अनुमति ली है अगर नहीं तो वह बुद्ध शरण में नहीं जा सकती। क्योंकि वेश्या ही एक ऐसी स्वतंत्र नारी है, जिसे किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं और अंततः दिव्या को राज नर्तकी आम्रपाली के शरण में जाना पड़ता है। यहाँ माधवी भी पिता ययाति और गालव के प्रति कर्त्तव्यबद्ध है, वह पिता से बिना किसी शिकायत के अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करती है फिर भी उसे उचित सम्मान नहीं मिलता। ययाति माधवी से बिना पूछे उसको दान में दे देते हैं, उसकी राय भी लेना आवश्यक नहीं समझते और माधवी से कहते हैं–'मैंने तुम्हें सौंप दिया है। इस युवक की अभ्यर्थना को मानते हुए मैंने तुम्हें दान में दे दिया है। तुम्हारे माध्यम से इस युवक की प्रतिज्ञा पूरी होगी।'[12] एक पिता द्वारा पुत्री को इस प्रकार दान दे देना उसकी संवेदनहीनता का परिचायक है। यश और प्रसिद्धि की चाहत में वह अपनी एकमात्र पुत्री को दान में दे देते हैं और भविष्य में भी उसके हित के बारे में सोचना भी पाप समझते हैं।

गालव के प्रति कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए माधवी स्वयं को मिटाकर गालव को सम्मान और प्रतिष्ठा दिलाती है। अग्निपरीक्षा देते-देते माधवी एक बार गालव की भी परीक्षा लेना चाहती है और बिना अनुष्ठान किए ही वह गालव के सामने आती है क्योंकि उसे विश्वास था कि गालव उससे प्रेम करता है, किंतु गालव उसके सुंदर रूप और यौवन से प्रेम करता था। माधवी अब तीन पुत्रों को जन्म दे चुकी एक स्त्री है जिसे गालव यह कहकर अस्वीकार कर देता है–'पर जो स्त्री मेरे गुरु के आश्रम में रह चुकी हो, उसे मैं अपनी पत्नी कैसे बना सकता हूँ?'[13] माधवी गालव से हृदय से प्रेम करती थी जबकि गालव का प्रेम केवल और केवल दैहिक था। तभी तो गालव, माधवी के जर्जर शरीर को देखकर विवाह करने से मना कर देता है, जबकि माधवी चाहती तो अनुष्ठान

ISSN 0975-735X

करके फिर से कुमारी हो सकती थी क्योंकि उसे चिरकौमार्य का वरदान प्राप्त था। तब माधवी प्रतिरोध करती है और गालव से कहती है–'ओ गालव, गालव तुम सीधी बात क्यों नहीं करते? दिल में तुम्हारे वासनाएँ कुलबुलाने लगी हैं, ऊपर से तुम आदर्शों और मर्यादाओं की बात करते हो।'[14] लेकिन जैसे ही माधवी ने कहा कि मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी, और अब तुम स्वतंत्र हो। और उसे धिक्कारती है तथा गालव का त्याग कर देती है और कहती है–'तुम जाओ, गालव, गुरुजन तुम्हारी राह देख रहे हैं। युग-युगों तक तुम्हें मेरा आशीर्वाद मिलता रहे। मैंने अपनी भूमिका निभा दी...।'[15] माधवी यहाँ पर पुरुष मानसिकता का प्रतिरोध करती है और गालव के लाख गिड़गिड़ाने के बाद भी उसे छोड़कर जीवन के अपनी डगर पर चल पड़ती है जहाँ वह वास्तविक रूप से स्वतंत्र थी। माधवी का यह कदम सामंती सोच रखने वाली पुरुष मानसिकता पर जोरदार तमाचा है क्योंकि वास्तविक रूप से स्त्री कोई वस्तु नहीं जिसे पुरुष जब चाहे खरीद-फरोख्त कर सके। माधवी का यह कदम संपूर्ण स्त्री समाज को आइना दिखाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी के पास जीवन को देखने की व्यापक दृष्टि है। मानवीयता उनके नाटकों की आधारभूमि है। व्यक्ति एवं समाज के जटिल संबंधों को सहजता से जीवंत बना देना उनकी विशेषता है। कला और सत्ता के विरोधाभासी चरित्रों की जितनी सशक्त अभिव्यक्ति उनके नाटकों में हुई है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। विषय चाहे ऐतिहासिक हो या काल्पनिक वे समकालीन समस्याओं एवं विसंगतियों को गहरी सूझबूझ के साथ प्रदर्शित करते हैं। नाटककार के रूप में हिंदी साहित्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

संदर्भ

1. आधुनिक भारतीय नाट्य-विमर्श, जयदेव तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ॰ 111
2. रंग विमर्श, ज्योतिष जोशी, नई किताब प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृ॰ 116
3. भीष्म साहनी, व्यक्ति और रचना, राजेश्वर सक्सेना एवं प्रताप ठाकुर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997, पृ॰ 16
4. आज के अतीत, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ॰ 44
5. आधुनिक भारतीय नाट्य-विमर्श, जयदेव तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ॰ 113
6. माधवी, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृ॰ 21
7. वही, पृ॰ 64
8. वही, पृ॰ 36-37
9. वही, पृ॰ 38-39
10. वही, पृ॰ 21
11. वही, पृ॰ 66
12. वही, पृ॰ 20
13. वही, पृ॰ 115
14. वही, पृ॰ 115
15. वही, पृ॰ 119

ISSN 0975-735X